वररुचिप्राकृतप्रकाश
(भाग - 1)

डॉ. कमलचन्द सोगाणी
श्रीमती सीमा ढींगरा

अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
राजस्थान

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वररुचिप्राकृतप्रकाश

(संज्ञा व सर्वनाम सूत्र विश्लेषण)

(भाग - 1)

डॉ. कमलचन्द सोगाणी
(निदेशक)
श्रीमती सीमा ढींगरा
(सहायक निदेशक)
अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जयपुर

प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
राजस्थान

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

• प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी,
जैनविद्या संस्थान,
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी,
श्रीमहावीरजी - 322 220 (राजस्थान)

• प्राप्ति-स्थान

1. **जैनविद्या संस्थान, श्री महावीरजी**
2. **अपभ्रंश साहित्य अकादमी,**
   दिगम्बर जैन नसियां भट्टारकजी,
   सवाई रामसिंह रोड,
   जयपुर - 302 004

• प्रथम बार, 2010

• मूल्य 150/- रुपये

• पृष्ठ संयोजन
श्याम अग्रवाल,
ए - 336, मालवीय नगर,
जयपुर, 9887223674

• मुद्रक
जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि.,
एम. आई. रोड, जयपुर - 302 001

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रमणिका

पाठ संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
	प्रकाशकीय	
1.	सूत्र-विवेचन	1–48
	संज्ञा-प्रकरण	9
	सर्वनाम-प्रकरण	27
	शौरसेनी प्राकृत सम्बन्धी सूत्र	47
2.	संज्ञा-शब्दरूप	49–58
	पुल्लिंग शब्द - देव, हरि, गामणी, साहु, सयंभू	50
	नपुंसकलिंग शब्द - कमल, वारि, महु	52
	स्त्रीलिंग शब्द - कहा, मइ, लच्छी, धेणु, बहू	54
	अतिरिक्त रूप - पिअर, पिउ, राअ, अप्प, अप्पाण	56
3.	सर्वनाम-शब्दरूप	59–72
	पुल्लिंग शब्द - सव्व, त, ज, क, एत, इम, अमु	59
	नपुंसकलिंग शब्द - सव्व, त, ज, क, एत, इम, अमु	63
	स्त्रीलिंग शब्द - सव्वा, ता, ती, जा, जी, का, की, एता, इमा, अमु	66
	तीनों लिंगों में - अम्ह	71
	तीनों लिंगों में - तुम्ह	72

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
	परिशिष्ट -1 प्राकृतप्रकाश की टीकाएँ	73
	परिशिष्ट -2 सूत्रों में प्रयुक्त सन्धि-नियम	75
	परिशिष्ट -3 सूत्रों का व्याकरणिक विश्लेषण	78
	सहायक पुस्तकें एवं कोश	118

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

'वररुचिप्राकृतप्रकाश' प्राकृत अध्ययनार्थियों के हाथों में समर्पित करते हुए हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है।

प्राकृत भाषा जन साधारण की भाषा के रूप में प्राचीन समय से ही विकास को प्राप्त होती रही है। भगवान महावीर ने इसी जन-भाषा 'प्राकृत' को अपने उपदेशों का माध्यम बनाया। जन सामान्य की यही भाषा कुछ समय बाद साहित्यिक भाषा के रूप में हमारे सामने आई। प्राकृत भाषा ही अपभ्रंश के रूप में विकसित होती हुई हिन्दी एवं प्रादेशिक भाषाओं का स्रोत बनी।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के अध्ययन में प्राकृत का अध्ययन आवश्यक है। प्राकृत भाषा का सम्बन्ध भारतीय आर्यभाषा के सभी कालों से रहा है। प्राकृत के अध्ययन के बिना आधुनिक आर्यभाषाओं की चर्चा पूर्ण नहीं हो सकती। किसी भी भाषा को सीखने-समझने के लिए उसके व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है।

भाषाज्ञान की दृष्टि से वररुचि का 'प्राकृतप्रकाश' बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। ईसा की तृतीय-चतुर्थ शताब्दी में रचित इस ग्रन्थ का प्राकृत अध्ययन के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है। प्राकृत व्याकरण के उपलब्ध ग्रन्थों में वररुचि का 'प्राकृतप्रकाश' असन्दिग्ध रूप से प्राचीन है। इसमें प्राकृत व्याकरण के सूत्र संस्कृत भाषा में रचित हैं। प्राकृत के विविध नियमों का विस्तृत विवेचन होने के कारण इस ग्रन्थ का विद्वत् जगत में काफी प्रचार एवं प्रसार हुआ है। अपनी रचनाशैली की सहजता और व्यापकता के कारण यह ग्रन्थ अपने रचनाकाल से ही काफी लोकप्रिय रहा है। प्राकृत भाषा के अध्ययन के लिए इस ग्रन्थ का महत्व असंदिग्ध है। इसके महत्व और आवश्यकता को देखते हुए ही विभिन्न कालों में इसकी अनेक टीकाएँ लिखी गईं।

इसमें बारह परिच्छेद हैं। पाँचवें व छठे परिच्छेद में क्रमशः संज्ञा व सर्वनाम के सूत्र हैं। प्रस्तुत पुस्तक में प्राकृत व्याकरण के इन्हीं संज्ञा व सर्वनाम के सूत्रों

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। सूत्रों का विश्लेषण एक ऐसी शैली से किया गया है जिससे अध्ययनार्थी संस्कृत के अति सामान्य ज्ञान से ही सूत्रों को समझ सकेंगे।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित 'जैनविद्या संस्थान' के अन्तर्गत 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' की स्थापना सन् 1988 में की गई। वर्तमान में इसके माध्यम से प्राकृत व अपभ्रंश का अध्यापन पत्राचार के माध्यम से किया जाता है। प्राकृत भाषा के सीखने-समझने को ध्यान में रखकर ही 'प्राकृत रचना सौरभ', 'प्राकृत अभ्यास सौरभ', 'प्रौढ प्राकृत रचना सौरभ', 'प्राकृत गद्य-पद्य सौरभ' आदि पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। प्रस्तुत पुस्तक भी प्राकृत अध्ययनार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी ऐसा हमारा विश्वास है।

पुस्तक-प्रकाशन के लिए अकादमी के विद्वानों विशेषतया श्रीमती सीमा ढींगरा के आभारी हैं जिन्होंने सूत्र-विश्लेषण के कार्य में अत्यन्त रुचिपूर्वक सहयोग दिया। पृष्ठ संयोजन के लिए श्री श्याम अग्रवाल एवं मुद्रण के लिए जयपुर प्रिन्टर्स धन्यवादार्ह हैं।

नरेशकुमार सेठी — **अध्यक्ष**

प्रकाशचन्द्र जैन — **मंत्री**

प्रबन्धकारिणी कमेटी

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

डॉ. कमलचन्द सोगाणी — **संयोजक**

जैनविद्या संस्थान समिति

माघशुक्ल पंचमी
आचार्य कुन्दकुन्द जन्मदिवस
वीर निर्वाण संवत् 2536
20. 01. 2010

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ - 1
संज्ञा, सर्वनाम, संख्यावाची शब्द-सूत्र-विवेचन

भूमिका

वररुचि ने तृतीय-चतुर्थ शताब्दी में प्राकृतप्रकाश की रचना की जो प्राकृत का सर्वाधिक लोकप्रिय व्याकरण ग्रंथ है। उन्होंने इसकी रचना संस्कृत भाषा के माध्यम से की। प्राकृत व्याकरण को समझाने के लिए संस्कृत-व्याकरण की पद्धति के अनुरूप संस्कृत भाषा में सूत्र लिखे गये। किन्तु सूत्रों का आधार संस्कृत भाषा होने के कारण यह नहीं समझा जाना चाहिए कि प्राकृत व्याकरण को समझने के लिए संस्कृत के विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता है। संस्कृत के बहुत ही सामान्यज्ञान से सूत्र समझे जा सकते हैं। हिन्दी, अंग्रेजी आदि किसी भी भाषा का व्याकरणात्मक ज्ञान भी प्राकृत-व्याकरण को समझने में सहायक हो सकता है।

अगले पृष्ठों में हम प्राकृत-व्याकरण के संज्ञा, सर्वनाम, संख्यावाची शब्दों के सूत्रों का विवेचन प्रस्तुत कर रहे हैं। सूत्रों को समझने के लिए स्वरसन्धि, व्यंजनसन्धि तथा विसर्गसन्धि के सामान्य-ज्ञान की आवश्यकता है।* साथ ही संस्कृत-प्रत्यय-संकेतों का ज्ञान भी होना चाहिए तथा उनके विभिन्न विभक्तियों में रूप समझे जाने चाहिए। प्राकृत में केवल दो ही वचन होते हैं - एकवचन तथा बहुवचन। अतः दो ही वचनों के संस्कृत-प्रत्यय-संकेतों को समझना आवश्यक है। ये प्रत्यय-संकेत निम्न प्रकार हैं-

विभक्ति	एकवचन के प्रत्यय	बहुवचन के प्रत्यय
प्रथमा	सु	जस्
द्वितीया	अम्	शस्
तृतीया	टा	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्यस्
पंचमी	ङसि	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	आम्
सप्तमी	ङि	सुप्

* सन्धि के नियमों के लिए परिशिष्ट-2 देखें।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इनमें से -

(1) **ङसि** और **ङि** के रूप हरि[1] की तरह चलेंगे। जैसे **'ङसि'** का सप्तमी एकवचन में **'ङसौ'** रूप बनेगा, तृतीया एकवचन में **'ङसिना'** रूप बनेगा। इसी प्रकार दूसरे रूप भी समझ लेने चाहिए।

(2) **अम्, जस्, शस्, भिस्, भ्यस्, आम्** और **सुप्** आदि के रूप हलन्त शब्द **भूभृत्**[2] की तरह चलेंगे। जैसे भिस् का सप्तमी एकवचन में रूप बनेगा **'भिसि'**, **'अम्'** का प्रथमा एकवचन में रूप बनेगा **'अम्'**, **'ङसि'** का षष्ठी एकवचन में रूप बनेगा **'ङसेः'**। इसी प्रकार दूसरे रूप भी समझ लेने चाहिए।

(3) **'टा'** के रूप **'गोपा'**[3] की तरह चलेंगे। जैसे **'टा'** का सप्तमी एकवचन में **'टि'** रूप बनेगा, षष्ठी एकवचन में **'टः'** रूप बनेगा, तृतीया एकवचन में **'टा'** बनेगा। इसी प्रकार दूसरे रूप बना लेने चाहिए।

(4) **उत्→उ, ओत्→ओ, एत्→ए, इत्→इ, आत्→आ** आदि हलन्त शब्दों के रूप भी **'भूभृत्'** की तरह चलेंगे। **'लुक्'** शब्द के रूप भी इसी प्रकार चलेंगे।

(5) इनके अतिरिक्त कुछ दूसरे शब्द सूत्रों में प्रयुक्त हुए हैं। उन शब्दों के रूप कहीं **'राम'**[4] की तरह, कहीं **'स्त्री'**[5] की तरह, कहीं **'गुरु'**[6] की तरह, कहीं **'मातृ'**[7] की तरह, कहीं **'राजन्'**[8] की तरह, कहीं **'आत्मन्'**[9] की तरह, कहीं **'पितृ'**[10] की तरह चलेंगे। इसी तरह शेष शब्दों के रूपों को **संस्कृत व्याकरण**[11] से समझ लेना चाहिए।

सूत्रों को पाँच सोपानों में समझाया गया है -

(1) सूत्रों में प्रयुक्त पदों का सन्धि विच्छेद किया गया है,

(2) सूत्रों में प्रयुक्त पदों की विभक्तियाँ लिखी गई हैं,

(3) सूत्रों का शब्दार्थ लिखा गया है,

(4) सूत्रों का पूरा अर्थ (प्रसंगानुसार) लिखा गया है तथा

(5) सूत्रों के प्रयोग लिखे गए हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अगले पृष्ठों में संज्ञा, सर्वनाम एवं संख्यावाची शब्दों से सम्बन्धित सूत्र दिए गये हैं। इन सूत्रों से निम्नलिखित संज्ञा शब्द, सव्व आदि सर्वनाम शब्द और संख्यावाची शब्दों के रूप निर्मित हो सकेंगे-

(क) पुल्लिंग शब्द - देव, हरि, गामणी, साहु, सयंभू।

(ख) नपुंसकलिंग शब्द - कमल, वारि, महु।

(ग) स्त्रीलिंग शब्द - कहा, मइ, लच्छी, धेणु, बहू।

इन रूपों के अतिरिक्त कुछ दूसरे शब्द-रूपों को भी सूत्रों में समझाया गया है।

सूत्रों को समझाते समय कुछ गणितीय चिह्नों का प्रयोग किया गया है जिन्हें संकेत-सूची में समझाया गया है।

---

1. हरि शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पंचमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
संबोधन	हे हरे	हे हरी	हे हरयः

2. भूभृत् शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वितीया	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः
तृतीया	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः
चतुर्थी	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
पंचमी	भूभृतः	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
षष्ठी	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सप्तमी	भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु
संबोधन	हे भूभृत्	हे भूभृतौ	हे भूभृतः

3. गोपा शब्द

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	गोपाः	गोपौ	गोपाः
द्वितीया	गोपाम्	गोपौ	गोपः
तृतीया	गोपा	गोपाभ्याम्	गोपाभिः
चतुर्थी	गोपे	गोपाभ्याम्	गोपाभ्यः
पंचमी	गोपः	गोपाभ्याम्	गोपाभ्यः
षष्ठी	गोपः	गोपोः	गोपाम्
सप्तमी	गोपि	गोपोः	गोपासु
संबोधन	हे गोपाः	हे गोपौ	हे गोपाः

4. राम शब्द

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
संबोधन	हे राम	हे रामौ	हे रामाः

5. स्त्री शब्द

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पंचमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
संबोधन	हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः

6. गुरु शब्द

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पंचमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
संबोधन	हे गुरो	हे गुरू	हे गुरवः

7. मातृ (माता)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातृः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पंचमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
संबोधन	हे मातः	हे मातरौ	हे मातरः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

8. राजन् (राजा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पंचमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
संबोधन	हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः

9. आत्मन् (आत्मा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पंचमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
संबोधन	हे आत्मन्	हे आत्मनौ	हे आत्मानः

10. पितृ (पिता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पंचमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
संबोधन	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः

11. प्रौढ रचनानुवाद कौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संकेत सूची

अ = अव्यय

• ( ) — इस प्रकार के कोष्ठक में मूलशब्द रखा गया है।

•{ ( ) + ( ) + ( ) .... }

इस प्रकार के कोष्ठक के अन्दर + चिह्न शब्दों में संधि का द्योतक है। यहां अन्दर के शब्दों में मूलशब्द ही रखे गये हैं।

•{ ( ) - ( ) - ( ) .... }

इस प्रकार के कोष्ठक के अन्दर '—' समास का द्योतक है।

• जहाँ कोष्ठक के बाहर केवल संख्या (जैसे 1/2, 2/1, ... आदि) ही लिखी हैं वहाँ उस कोष्ठक के अन्दर का शब्द 'संज्ञा' है।

1/1 — प्रथमा/एकवचन

1/2 — प्रथमा/द्विवचन

1/3 — प्रथमा/बहुवचन

2/1 — द्वितीया/एकवचन

2/2 — द्वितीया/द्विवचन

2/3 — द्वितीया/बहुवचन

3/1 — तृतीया/एकवचन

3/2 — तृतीया/द्विवचन

3/3 — तृतीया/बहुवचन

4/1 — चतुर्थी/एकवचन

4/2 — चतुर्थी/द्विवचन

4/3 — चतुर्थी/बहुवचन

5/1 — पंचमी/एकवचन

5/2 — पंचमी/द्विवचन

5/3 — पंचमी/बहुवचन

6/1 — षष्ठी/एकवचन

6/2 — षष्ठी/द्विवचन

6/3 — षष्ठी/बहुवचन

7/1 — सप्तमी/एकवचन

7/2 — सप्तमी/द्विवचन

7/3 — सप्तमी/बहुवचन

8/1 — संबोधन/एकवचन

8/2 — संबोधन/द्विवचन

8/3 — संबोधन/बहुवचन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संज्ञा-सर्वनाम-संख्यावाची शब्द-सूत्र

1. **अत ओत् सोः 5/1**

अत ओत् सोः { (अतः) + (ओत्) } सोः

अतः (अत्) 5/1 ओत् (ओत्) 1/1 सोः (सु) 6/1

अत् से परे सु के स्थान पर ओत्→**'ओ'** (होता है)।

अकारान्त पुल्लिंग शब्दों से परे सु (प्रथमा एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'ओ'** होता है।

(देव +सु) = (देव + ओ) ∽ **देवो (प्रथमा एकवचन)**

2. **जश्शसोर्लोपः 5/2**

जश्शसोर्लोपः { (जस्) + (शसोः) + (लोपः) } .

{ (जस्) - (शस्) 6/2 } लोपः (लोप) 1/1

जस् और शस् के स्थान पर **'लोप'** (होता है)।

अकारान्त पुल्लिंग शब्दों से परे जस् (प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय) और शस् (द्वितीया बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **लोप** (शून्य प्रत्यय) होता है।

(देव + जस्) ∽ (देव + '0') ∽ **देवा[1] (प्रथमा बहुवचन)**

(देव + शस्) ∽ (देव + '0') ∽ **देवा[1] (द्वितीया बहुवचन)**

1. सूत्र 5/11 से मूलशब्द के अन्त्य 'अ' का 'आ' हुआ है।

3. **अतोऽमः 5/3**

अतोऽमः { (अतः) + (अमः) }

अतः (अत्) 6/1 अमः (अम्) 6/1

अम् के अत्→**'अ'** का (लोप होता है)।

अकारान्त पुल्लिंग शब्दों से परे अम् (द्वितीया एकवचन के प्रत्यय) के 'अ' का लोप होता है (और **'म्'** शेष रहता है)

(देव + अम्) ∽ (देव + म्) ∽ **देवं[1] (द्वितीया एकवचन)**

1. सूत्र 4/12 'मो बिन्दुः' से पदान्त **म्** को **अनुस्वार** हुआ है

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

4. **टामोर्णः 5/4**

टामोर्णः { (टा) + (आमोः) + (णः) }

{ (टा) - (आम्) 6/2 } णः (ण) 1/1

टा और आम् के स्थान पर **'ण'** (होता है)।

अकारान्त पुल्लिंग शब्दों से परे टा (तृतीया एकवचन के प्रत्यय) और आम् (षष्ठी बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'ण'** होता है।

(देव + टा) = (देव + ण) = **देवेण**[1] **(तृतीया एकवचन)**

(देव + आम्) = (देव + ण) = **देवाण**[2] **(षष्ठी बहुवचन)**

1. सूत्र 5/12 से मूलशब्द के अन्त्य 'अ' का 'ए' हुआ है।
2. सूत्र 5/11 से मूलशब्द के अन्त्य 'अ' का 'आ' हुआ है।

5. **भिसो हिं 5/5**

भिसो हिं { (भिसः) + (हिं) }

भिसः (भिस्) 6/1 हिं (हिं) 1/1

भिस् के स्थान पर **'हिं'** (होता है)।

अकारान्त पुल्लिंग शब्दों से परे भिस् (तृतीया बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'हिं'** होता है।

(देव + भिस्) = (देव + हिं) = **देवेहिं**[1] **(तृतीया बहुवचन)**

1. सूत्र 5/12 से मूलशब्द के अन्त्य 'अ' का 'ए' हुआ है।

6. **ङसेरादोदुहयः 5/6**

ङसेरादोदुहयः { (ङसेः) + (आ) + (दो) + (दु) + (हयः) }

ङसेः (ङसि) 6/1 { (आ) - (दो) - (दु) - (हि) 1/3 }

ङसि के स्थान पर **'आ'**, **'दो'**, **'दु'**, **'हि'** (होते हैं)।

अकारान्त पुल्लिंग शब्दों से परे ङसि (पंचमी एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'आ'**, **'दो'**, **'दु'**, **'हि'** होते हैं।

(देव + ङसि) = (देव + आ,दो,दु,हि) = **देवा, देवादो, देवादु देवाहि**[1] **(पंचमी एकवचन)**

1. सूत्र 5/11 से मूलशब्द के अन्त्य 'अ' का 'आ' हुआ है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

7. **भ्यसो हिन्तो सुन्तो 5/7**

भ्यसो हिन्तो सुन्तो { (भ्यसः) + (हिन्तो)} सुन्तो

भ्यसः (भ्यस्) 6/1 हिन्तो (हिन्तो) 1/1 सुन्तो (सुन्तो) 1/1

भ्यस् के स्थान पर **'हिन्तो', 'सुन्तो'** (होते हैं)।

अकारान्त पुल्लिंग शब्दों से परे भ्यस् (पंचमी बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'हिन्तो', 'सुन्तो'** होते हैं।

(देव+भ्यस्) ∽ (देव + हिन्तो, सुन्तो) ∽ **देवाहिन्तो,देवासुन्तो,देवेहिन्तो,देवेसुन्तो**[1] **(पंचमी बहुवचन)**

1. सूत्र 5/12 से मूल शब्द के अन्त्य अ का 'आ' और 'ए' हुआ है।

8. **स्सो ङसः 5/8**

स्सो ङसः { (स्सः) + (ङसः)}

स्सः (स्स) 1/1 ङसः (ङस्) 6/1

ङस् के स्थान पर **'स्स'** (होता है)।

अकारान्त पुल्लिंग शब्दों से परे ङस् (षष्ठी एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'स्स'** होता है।

(देव + ङस्) ∽ (देव + स्स) ∽ **देवस्स (षष्ठी एकवचन)**

9. **ङेरेम्मी 5/9**

ङेरेम्मी { (ङेः) + (ए) + (म्मी) }

ङेः (ङि) 6/1 { (ए) - (म्मि) 1/2 }

ङि के स्थान पर **'ए'** और **'म्मि'** (होते हैं)।

अकारान्त पुल्लिंग शब्दों से परे ङि (सप्तमी एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'ए'** और **'म्मि'** होते हैं।

(देव + ङि) ∽ (देव + ए, म्मि) ∽ **देवे, देवम्मि (सप्तमी एकवचन)**

10. **सुपः सुः 5/10**

सुपः (सुप्) 6/1 सुः (सु) 1/1

सुप् के स्थान पर **'सु'** (होता है)।

अकारान्त पुल्लिंग शब्दों से परे सुप् (सप्तमी बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

'सु' होता है।

(देव + सुप्) = (देव + सु) = **देवेसु[1] (सप्तमी बहुवचन)**

1. सूत्र 5/12 से मूलशब्द के अन्त्य 'अ' का 'ए' हुआ है।

11. **जश्शसुङस्यांसु दीर्घः 5/11**

जश्शसुङस्यांसु दीर्घः { (जस्) + (शस्) + (ङसि) + (आंसु) } दीर्घः
{ (जस्) + (शस्) + (ङसि) + (आम्) 7/3 } दीर्घः (दीर्घ) 1/1
जस् , शस् , ङसि , आम् परे होने पर **'दीर्घ'** (होता है)।

अकारान्त पुल्लिंग शब्दों से परे 'जस्' (प्रथमा बहुवचन का प्रत्यय), 'शस्' (द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय), 'ङसि' (पंचमी एकवचन का प्रत्यय), 'आम्' (षष्ठी बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर अन्त्य अ का 'दीर्घ' होता है।

(देव + जस्) = (देव + '0') = **देवा (प्रथमा बहुवचन)**
(देव + शस्) = (देव + '0') = **देवा (द्वितीया बहुवचन)**
(देव + ङसि) = (देव + आ,दो,दु,हि) = **देवा, देवादो, देवादु, देवाहि (पंचमी एकवचन)**
(देव + आम्) = (देव + ण) = **देवाण (षष्ठी बहुवचन)**

12. **ए च सुप्यङिङसोः 5/12**

ए च सुप्यङिङसोः ए च { (सुपि) + (अ) + (ङि) + (ङसोः) }
ए (ए) 1/1 च = और सुपि (सुप्) 7/1 अ = नहीं {(ङि) - (ङस्) 7/2}
सुप् परे होने पर **'ए'** (होता है) और (दीर्घ भी होता है) ङि, ङस् परे होने पर नहीं।

सुप् (सु से सुप् तक विभक्तिबोधक प्रत्यय) परे होने पर अकारान्त शब्दों के अन्तिम 'अ' के स्थान पर **'ए'** होता है और (5/11 से दीर्घ होने के पश्चात बचे हुए पंचमी बहुवचन में) दीर्घ भी होता है परन्तु ङि (सप्तमी एकवचन का प्रत्यय) और ङस् (षष्ठी एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर एत्व या दीर्घ नहीं होता।

(देव + शस्) = (देव + '0') = **देवे (द्वितीया बहुवचन)**
(देव + टा) = (देव + ण) = **देवेण (तृतीया एकवचन)**
(देव + भिस्) = (देव + हिं) = **देवेहिं (तृतीया बहुवचन)**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(देव+भ्यस्) = (देव + हिन्तो, सुन्तो) = **देवाहिन्तो,देवासुन्तो,देवेहिन्तो,देवेसुन्तो (पंचमी बहुवचन)**

(देव + सुप्) = (देव + सु) = **देवेसु (सप्तमी बहुवचन)**

(देव + ङस्) = (देव + स्स) = देवेस्स या देवास्स नहीं बनेगा।

(देव + ङि) = (देव + म्मि) = देवेम्मि या देवाम्मि नहीं बनेगा।

नोट - इस सूत्र में सु से सुप् तक की बात होने के बाद भी टीकाकारों ने उपर्युक्त विभक्तियों की ही चर्चा की है।

13. क्वचिद् ङसिङ्योर्लोपः 5/13

क्वचिद् ङसिङ्योर्लोपः { (क्वचित्) + (ङसि) + (ङ्योः) + (लोपः)}

क्वचित् = कभी-कभी { (ङसि) - (ङि) 7/2} लोपः (लोप) 1/1

ङसि और ङि परे होने पर कभी-कभी (उनका) लोप (होता है)।

अकारान्त शब्दों के बाद ङसि (पंचमी एकवचन का प्रत्यय) और ङि (सप्तमी एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर कभी-कभी उनका लोप हो जाता है।

(देव + ङसि) = (देव + लोप) = देव (पंचमी एकवचन)

(देव + ङि) = (देव + लोप) = देव (सप्तमी एकवचन)

14. इदुतोः शसो णो 5/14

इदुतोः शसो णो { (इत्) + (उतोः) + (शसः) + (णो) }

{ (इत्) + (उत्) 6/2} शसः (शस्) 6/1 णो (णो) 1/1

इत्→इ, ईकारान्त, उत्→उ, ऊकारान्त के शस् के स्थान पर **'णो'** (होता है)।

इ, ईकारान्त और उ, ऊकारान्त पुल्लिंग शब्दों के शस् (द्वितीया बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'णो'** होता है।

(हरि + शस्) = (हरि + णो) = **हरिणो (द्वितीया बहुवचन)**

(गामणी + शस्) = (गामणी + णो) = **गामणीणो (द्वितीया बहुवचन)**

(साहु + शस्) = (साहु + णो) = **साहुणो (द्वितीया बहुवचन)**

(सयंभू + शस्) = (सयंभू + णो) = **सयंभूणो (द्वितीया बहुवचन)**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

15. ङसो वा 5/15

ङसो वा { (ङसः) + (वा) }

ङसः (ङस्) 6/1 वा = विकल्प से

ङस् के स्थान पर विकल्प से (**'णो'** होता है)।

इ, ईकारान्त और उ, ऊकारान्त पुल्लिंग शब्दों से परे ङस् (षष्ठी एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर विकल्प से **'णो'** होता है।

(हरि + ङस्) = (हरि + णो) = **हरिणो (षष्ठी एकवचन)**

(गामणी + ङस्) = (गामणी + णो) = **गामणीणो (षष्ठी एकवचन)**

(साहु + ङस्) = (साहु + णो) = **साहुणो (षष्ठी एकवचन)**

(सयंभू + ङस्) = (सयंभू + णो) = **सयंभूणो (षष्ठी एकवचन)**

16. जसश्च ओ यूत्वम् 5/16

जसश्च ओ यूत्वम् { (जसः) + (च) } ओ { (ई) + (ऊत्वम्) }

जसः (जस्) 6/1 च = और ओ (ओ) 1/1 {(ई) - (ऊत्व) 1/1}

जस् के स्थान पर **'ओ'** (होता है साथ ही अन्त्य स्वर) ई और ऊत्व→ऊ (होता है) और (णो भी होता है)।

इकारान्त और उकारान्त पुल्लिंग शब्दों से परे जस् (प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'ओ'** होता है तथा शब्दों के अन्तिम इ और उ को ई और ऊ हो जाता है और **'णो'** प्रत्यय भी होता है।

(हरि + जस्) = (हरी + ओ) = **हरीओ (प्रथमा बहुवचन)**

(साहु + जस्) = (साहू + ओ) = **साहूओ (प्रथमा बहुवचन)**

(हरि + जस्) = (हरि + णो) = **हरिणो (प्रथमा बहुवचन)**

(साहु + जस्) = (साहु + णो) = **साहुणो (प्रथमा बहुवचन)**

17. टाणा 5/17

टाणा { (टा) - (णा) 1/1 }

टा के स्थान पर **'णा'** (होता है)।

इ, ईकारान्त और उ, ऊकारान्त पुल्लिंग शब्दों से परे टा (तृतीया एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'णा'** होता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(हरि + टा) = (हरि + णा) = **हरिणा (तृतीया एकवचन)**
(गामणी + टा) = (गामणी + णा) = **गामणीणा (तृतीया एकवचन)**
(साहु + टा) = (साहु + णा) = **साहुणा (तृतीया एकवचन)**
(सयंभू + टा) = (सयंभू + णा) = **सयंभूणा (तृतीया एकवचन)**

18. सुभिस्सुप्सु दीर्घः 5/18

सुभिस्सुप्सु दीर्घः { (सु) - (भिस्) - (सुप्) 7/3 } दीर्घः (दीर्घ) 1/1
सु, भिस्, सुप् परे होने पर **'दीर्घ'** (होता है)।
इकारान्त और उकारान्त पुल्लिंग शब्दों में सु (प्रथमा एकवचन का प्रत्यय), भिस् (तृतीया बहुवचन का प्रत्यय) और सुप् (सप्तमी बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर अन्त्य इ और उ को **'दीर्घ'** होता है। (और दीर्घ दीर्घ ही रहता है)
(हरि + सु) = **हरी (प्रथमा एकवचन)** (सु का लोप होगा)[1]
(साहु + सु) = **साहू (प्रथमा एकवचन)** (सु का लोप होगा)[1]
(हरि + भिस्) = **हरीहिं (तृतीया बहुवचन)**
(साहु + भिस्) = **साहूहिं (तृतीया बहुवचन)**
(सूत्र 6/60 और 5/5 से भिस् = हिं होगा)
(हरि + सुप्) = **हरीसु (सप्तमी बहुवचन)**
(साहु + सुप्) = **साहूसु (सप्तमी बहुवचन)**
(सूत्र 6/60 और 5/10 से सुप् = सु होगा)
1. मनोरमा टीका के आधार पर

नोट - सुबोधिनी टीका के आधार पर इकारान्त और उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में भी इन्हीं प्रत्ययों का प्रयोग होगा। गामणी और सयंभू के रूप इसी सूत्र के आधार से बना लेने चाहिये।

19. स्त्रियां शस उदोतौ 5/19

स्त्रियां शस उदोतौ { (स्त्रियाम्) + (शसः) + (उत्) + (ओतौ) }
स्त्रियाम् (स्त्री) 7/1 शसः (शस्) 6/1 { (उत्) - (ओत्) 1/2 }
स्त्रीलिंग में शस् के स्थान पर उत्→**'उ'** और ओत्→**'ओ'** (होते हैं)।
स्त्रीलिंग शब्दों में शस् (द्वितीया बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर उत्→**'उ'** और ओत्→**'ओ'** (होते हैं)।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(कहा+शस्) ≃ (कहा + उ, ओ) ≃ **कहाउ, कहाओ (द्वितीया बहुवचन)**
(मइ+शस्) ≃ (मइ + उ, ओ) ≃ **मइउ, मइओ (द्वितीया बहुवचन)**
(लच्छी+शस्)≃ (लच्छी+उ, ओ) ≃ **लच्छीउ, लच्छीओ (द्वितीया बहुवचन)**
(धेणु+शस्) ≃ (धेणु+उ, ओ) ≃ **धेणुउ, धेणुओ (द्वितीया बहुवचन)**
(बहू+शस्) ≃ (बहू + उ, ओ) ≃ **बहूउ, बहूओ (द्वितीया बहुवचन)**

20. जसो वा 5/20

जसो वा { (जसः) + (वा) }
जसः (जस्) 6/1 वा ≃ विकल्प से
जस् के स्थान पर विकल्प से (**'उ'** और **'ओ'** होते हैं)।
स्त्रीलिंग शब्दों में जस् (प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर विकल्प से **'उ'** और **'ओ'** होते हैं।
(कहा+जस्) ≃ (कहा+ उ, ओ) ≃ **कहाउ, कहाओ (प्रथमा बहुवचन)**
(मइ+जस्) ≃ (मइ + उ, ओ) ≃ **मइउ, मइओ (प्रथमा बहुवचन)**
(लच्छी+जस्) ≃ (लच्छी+उ, ओ) ≃ **लच्छीउ, लच्छीओ (प्रथमा बहुवचन)**
(धेणु+जस्) ≃ (धेणु + उ, ओ) ≃ **धेणुउ, धेणुओ (प्रथमा बहुवचन)**
(बहू+जस्) ≃ (बहू + उ, ओ) ≃ **बहूउ, बहूओ (प्रथमा बहुवचन)**

नोटः अदन्तवत् (6/60) सूत्र के अनुसार विकल्प से 'कहा', 'मइ', 'लच्छी', 'धेणू', 'बहू', रूप भी बनेंगे।

21. अमि ह्रस्वः 5/21

अमि (अम्) 7/1 ह्रस्वः (ह्रस्व) 1/1
अम् परे होने पर **'ह्रस्व'** (होता है)।
स्त्रीलिंग शब्दों में अम् (द्वितीया एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर (दीर्घ का) **'ह्रस्व'** होता है (और ह्रस्व स्वर ह्रस्व ही रहता है)।
(कहा + अम्) ≃ (कह + अम्) ≃ **कहं*** **(द्वितीया एकवचन)**
(मइ + अम्) ≃ (मइ + अम्) ≃ **मइं*** **(द्वितीया एकवचन)**
(लच्छी + अम्) ≃ (लच्छि + अम्) ≃ **लच्छिं*** **(द्वितीया एकवचन)**
(धेणु + अम्) ≃ (धेणु + अम्) ≃ **धेणुं*** **(द्वितीया एकवचन)**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(बहू + अम्) = (बहु + अम्) = **बहुं*** **(द्वितीया एकवचन)**

* सूत्र 5/3 से अम् के अ का लोप और 4/12 से पदान्त म् का अनुस्वार हुआ है।

22. **टाङस्ङीनामिदेददातः 5/22**

टाङस्ङीनामिदेददातः {(टा) + (ङस्) + (ङीनाम्) + (इत्) + (एत्) + (अत्) + (आतः) }

{ (टा) - (ङस्) - (ङि) 6/3 } { (इत्) - (एत्) - (अत्) - (आत्)1/3}

टा, ङस् और ङि के स्थान पर इत्→**'इ'**, एत्→**'ए'** ,अत् →**'अ'**, आत्→**'आ'** (होते हैं)।

स्त्रीलिंग शब्दों में टा (तृतीया एकवचन का प्रत्यय) , ङस् (षष्ठी एकवचन का प्रत्यय) और ङि (सप्तमी एकवचन का प्रत्यय) के स्थान पर इत्→ **'इ'**, एत्→**'ए'** ,अत्→**'अ'**, आत्→**'आ'** होते हैं ।

तृतीया एकवचन

(कहा + टा) = (कहा+इ, ए)[1] = **कहाइ, कहाए**

(मइ + टा) = (मइ+अ, आ, इ, ए) = **मइअ, मइआ, मइइ, मइए**

(लच्छी + टा) = (लच्छी+अ, आ, इ, ए) = **लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए**

(धेणु+टा) = (धेणु+अ, आ, इ, ए) = **धेणुअ, धेणुआ, धेणुइ, धेणुए**

(बहू+टा) = (बहू+अ, आ, इ, ए) = **बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए**

षष्ठी एकवचन

(कहा + ङस्) = (कहा + इ, ए)[1] = **कहाइ, कहाए**

(मइ + ङस्) = (मइ + अ, आ, इ, ए) = **मइअ, मइआ, मइइ, मइए**

(लच्छी+ङस्) = (लच्छी +अ, आ, इ, ए) = **लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए**

(धेणु+ङस्) = (धेणु + अ, आ, इ, ए) = **धेणुअ, धेणुआ, धेणुइ, धेणुए**

(बहू + ङस्) = (बहू + अ, आ, इ, ए) = **बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सप्तमी एकवचन

(कहा + ङि) = (कहा + इ, ए)[1] = **कहाइ, कहाए**

(मइ + ङि) = (मइ + अ, आ, इ, ए) = **मइअ, मइआ, मइइ, मइए**

(लच्छी + ङि) = (लच्छी+अ, आ, इ, ए) = **लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए**

(धेणु+ङि) = (धेणु + अ, आ, इ, ए) = **धेणुअ, धेणुआ, धेणुइ, धेणुए**

(बहू + ङि) = (बहू + अ, आ, इ, ए) = **बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए**

1. आकारान्त शब्द में अ और आ प्रत्यय नहीं लगेंगे (सूत्र 5/23)

23. नातोऽदातौ 5/23

नातोऽदातौ { (न) + (आतः) + (अत्) + (आतौ) }

न = नहीं आतः (आत्) 5/1 { (अत्) - (आत्) 1/2}

आकारान्त से परे अत्→**'अ'** और आत्→**'आ'** नहीं (होते)।

आकारान्त से परे टा (तृतीया एकवचन का प्रत्यय) , ङस् (षष्ठी एकवचन का प्रत्यय) और ङि (सप्तमी एकवचन का प्रत्यय) के स्थान पर अत्→**'अ'**, आत्→**'आ'** प्रत्यय नहीं होते।

कहाअ और कहाआ (तृतीया एकवचन में नहीं बनते)

कहाअ और कहाआ (षष्ठी एकवचन में नहीं बनते)

कहाअ और कहाआ (सप्तमी एकवचन में नहीं बनते)

24. आदीतौ बहुलम् 5/24

आदीतौ बहुलम् { (आत्) + (ईतौ) } बहुलम्

{ (आत्) - (ईत्) 1/2 } बहुलम् (बहुल) 1/1

(आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में अन्त्य आ के स्थान पर) आ और ई अधिकतर (होते हैं)।

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में अन्त्य आ के स्थान पर आ और ई अधिकतर होते हैं।

(हलद्दा, हलद्दी, सुप्पणहा, सुप्पणही)[1]

1. मनोरमा, संजीवनी टीका।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

25. न नपुंसके[1] 5/25

न = नहीं नपुंसके (नपुंसक) 7/1

नपुंसकलिंग में नहीं (होता)।

इकारान्त और उकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के बाद 'सु' (प्रथमा एकवचन का प्रत्यय) होने पर मूलशब्द के अन्तिम स्वर को (पुल्लिंग शब्दों के समान) **दीर्घ** नहीं होता। (यह सूत्र 5/18 का निषेध सूत्र है)

(वारि + सु) = वारी नहीं बनेगा।

(महु + सु) = महू नहीं बनेगा।

1. टीकाकारों के अनुसार यह सूत्र केवल 'सु' (प्रथमा एकवचन का प्रत्यय) के लिए ही है।

26. इं जश्शसोदीर्घः 5/26

इं जश्शसोदीर्घः इं { (जस्) + (शसः) + (दीर्घः) }

इं (इं) 1/1 { (जस्) - (शस्) 6/1 } दीर्घः (दीर्घ) 1/1

जस् और शस् के स्थान पर **'इं'** (होता है) (और) दीर्घ (भी होता है)।

नपुंसकलिंग शब्दों में जस् (प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय), शस् (द्वितीया बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'इं'** होता है और साथ ही अन्त्य स्वर **'दीर्घ'** होता है।

(कमल + जस्) = (कमल + इं) = **कमलाइं (प्रथमा बहुवचन)**

(वारि + जस्) = (वारि + इं) = **वारीइं (प्रथमा बहुवचन)**

(महु + जस्) = (महु + इं) = **महूइं (प्रथमा बहुवचन)**

(कमल + शस्) = (कमल + इं) = **कमलाइं (द्वितीया बहुवचन)**

(वारि + शस्) = (वारि + इं) = **वारीइं (द्वितीया बहुवचन)**

(महु + शस्) = (महु + इं) = **महूइं (द्वितीया बहुवचन)**

27. नामन्त्रणे सावोत्वदीर्घबिन्दवः 5/27

नामन्त्रणे सावोत्वदीर्घबिन्दवः { (न) + (आमन्त्रणे) } { (सौ) + (ओत्व) + (दीर्घ) + (बिन्दवः) }

न = नहीं आमन्त्रणे (आमन्त्रण) 7/1 सौ (सु) 7/1 {(ओत्व) - (दीर्घ) - (बिन्दु) 1/3 }

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आमन्त्रण (अर्थ) में सु (प्रथमा एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर **'ओत्व'**, **'दीर्घ'**, **'बिन्दु'** नहीं (होते)।

आमन्त्रण (सम्बोधन अर्थ) में सु (प्रथमा एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर ओत्व→**ओ** (अकारान्त पुल्लिंग एकवचन में लगनेवाला प्रत्यय), दीर्घ (इकारान्त शब्दों में प्रयुक्त एकवचन का प्रत्यय) और **बिन्दु** (नपुंसकलिंग शब्दों में प्रयुक्त एकवचन का प्रत्यय) **नहीं** होते।

(देव + सु) = हे देव (हे देवो नहीं बनेगा)
(हरि + सु) = हे हरि (हे हरी नहीं बनेगा)
(कमल + सु) = हे कमल (हे कमलं नहीं बनेगा)

नोटः इसी सूत्र के आधार से इकारान्त, उकारान्त पु., नपुं, स्त्री. शब्दों के रूपों को भी समझना चाहिए।

28. स्त्रियामात एत् 5/28

स्त्रियामात एत् { (स्त्रियाम्) + (आतः) + (एत्) }
स्त्रियाम् (स्त्री) 7/1 आतः (आत्) 6/1 एत् (एत्) 1/1
स्त्रीलिंग में आत्→**'आ'** के स्थान पर एत्→**'ए'** (हो जाता है)।

स्त्रीलिंग सम्बोधन एकवचन में आकारान्त शब्द के आत्→**'आ'** के स्थान पर एत्→**'ए'** हो जाता है।

(कहा + सु) = (कहा + ए) = **हे कहे (सम्बोधन एकवचन)**

29. ईदूतोर्ह्रस्वः 5/29

ईदूतोर्ह्रस्वः { (ईत्) + (ऊतोः) + (ह्रस्वः)}
{ (ईत्) + (ऊत्) 6/2 } ह्रस्वः (ह्रस्व) 1/1
ईत् →**ई** और ऊत् →**ऊ** के स्थान पर ह्रस्व (इ, उ होता है)।

सम्बोधन एकवचन में ईकारान्त तथा ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के स्थान पर ह्रस्व इ और उ हो जाता है।

(लच्छी + सु) = **हे लच्छि (सम्बोधन एकवचन)** (सु का लोप होगा)[1]
(बहू + सु) = **हे बहु (सम्बोधन एकवचन)** (सु का लोप होगा)[1]

1. मनोरमा, संजीवनी टीका के आधार पर।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

30. सोर्बिन्दुर्नपुंसके 5/30

सोर्बिन्दुर्नपुंसके { (सोः) + (बिन्दुः) + (नपुंसके) }

सोः (सु) 6/1 बिन्दुः (बिन्दु) 1/1 नपुंसके (नपुंसक) 7/1

नपुंसकलिंग में 'सु' के स्थान पर **'बिन्दु'** (होता है)।

अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों में 'सु' (प्रथमा एकवचन का प्रत्यय) के स्थान पर बिन्दु 'अनुस्वार' (ं) होता है।

(कमल + सु) = (कमल + ं) = **कमलं (प्रथमा एकवचन)**

(वारि + सु) = (वारि + ं) = **वारिं (प्रथमा एकवचन)**

(महु + सु) = (महु + ं) = **महुं (प्रथमा एकवचन)**

31. ऋत आरः सुपि 5/31

ऋत आरः सुपि { (ऋतः) + (आरः) } सुपि

ऋतः (ऋत्) 6/1 आरः (आर) 1/1 सुपि (सुप्) 7/1

सुप् परे होने पर ऋत् →ऋ के स्थान पर **'आर'** (हो जाता है)।

सुप् (प्रथमा से सप्तमी तक के विभक्तिबोधक प्रत्यय) परे होने पर ऋकारान्त शब्दों के **'ऋ'** के स्थान पर **'आर'** हो जाता है।

भर्तृ →भत्तार

भत्तार शब्द में अकारान्त शब्द के समान ही सभी विभक्तिबोधक प्रत्यय लग जाएंगे[1]

32. मातुरात् 5/32

मातुरात् { (मातुः) + (आत्) }

मातुः (मातृ) 6/1 आत् (आत्) 1/1

मातृ के (ऋ के स्थान पर) आत्→**आ** (होता है)।

सुप् (प्रथमा से सप्तमी तक के विभक्तिबोधक प्रत्यय) परे होने पर मातृ के ऋ के स्थान पर आत् →**आ** होता है।

मातृ →माता→माआ

माआ शब्द में आकारान्त शब्द के समान ही सभी विभक्तिबोधक प्रत्यय लग जाएंगे[1]

1. मनोरमा, संजीवनी टीका के आधार पर।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

33. उर्जस् - शस् - टा - ङस् - सुप्सु वा 5/33

उर्जस्-शस्-टा-ङस्-सुप्सु वा { (उः) + (जस्) }

उः (उ) 1/1 {(जस्) - (शस्) - (टा) - (ङस्) - (सुप्) 7/3}

वा = विकल्प से

जस्, शस्, टा, ङस्, सुप् परे होने पर (ऋ के स्थान पर) विकल्प से **'उ'** होता है। **जस्** (प्रथमा बहुवचन का प्रत्यय), **शस्** (द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय), **टा** (तृतीया एकवचन का प्रत्यय), **ङस्** (षष्ठी एकवचन का प्रत्यय), **सुप्** (सप्तमी बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर ऋकारान्त शब्दों के **ऋ** के स्थान पर **उ** होता है अर्थात् इन विभक्ति, वचनों में ऋकारान्त शब्द के रूप विकल्प से उकारान्त शब्दों की तरह चलते हैं।

भर्तृ → भत्तु [1]

(भत्तु + जस्) = (भत्तु + णो) = **भत्तुणो (प्रथमा बहुवचन)** (सूत्र = 5/16)

(भत्तु+ शस्) = (भत्तु + णो) = **भत्तुणो (द्वितीया बहुवचन)** (सूत्र = 5/14)

(भत्तु + टा) = (भत्तु + णा) = **भत्तुणा (तृतीया एकवचन)** (सूत्र = 5/17)

(भत्तु + ङस्) = (भत्तु + णो) = **भत्तुणो (षष्ठी एकवचन)** (सूत्र = 5/15)

(भत्तु+सुप्) = (भत्तु+सु) = **भत्तूसु (सप्तमी बहुवचन)** (सूत्र = 5/18, 5/10)

34. पितृभ्रातृजामातृणामरः 5/34

पितृभ्रातृजामातृणामरः { (पितृभ्रातृजामातृणाम्) + (अरः) }

{ (पितृ) - (भ्रातृ) - (जामातृ) 6/3 } अरः (अर) 1/1

पितृ, भ्रातृ, जामातृ के (ऋ के स्थान पर) **'अर'** (होता है)।

सुप् (प्रथमा से सप्तमी तक के विभक्तिबोधक प्रत्यय) परे होने पर पितृ, भ्रातृ, जामातृ के (ऋ के स्थान पर) **'अर'** होता है।

पितृ→पितर→पिअर[1]

भ्रातृ→भाअर[1]

जामातृ →जामाअर[1]

इन शब्दों के रूप सभी विभक्तियों में अकारान्त शब्दों की तरह चलेंगे[2]

1. देखें पाइअसद्दमहण्णवो।
2. मनोरमा, संजीवनी टीका के आधार पर।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

35. आ च सौ 5/35

आ (आ) 1/1 च = और सौ (सु) 7/1

सु परे होने पर **'आ'** और ('अर' होता है)।

पितृ, भ्रातृ, जामातृ शब्दों के सु (प्रथमा एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर ऋ के स्थान पर **'आ'** और **'अर'** होते हैं।

पितृ →पिता →पिआ, पितरो →पिअरो (प्रथमा एकवचन)

भ्रातृ →भाता→भाआ, भातरो →भाअरो (प्रथमा एकवचन)

जामातृ →जामाता→जामाआ, जामातरो→जामाअरो (प्रथमा एकवचन)

36. राज्ञः 5/36

राज्ञः (राजन्) 6/1

राजन् शब्द के (सु परे होने पर 'आ' होता है)।

राजन्→राअ/राय[1] शब्द के सु (प्रथमा एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर **'आ'** होता है।

राआ/राया (प्रथमा एकवचन)

1. राजन्→राज (अन्त्यहलः 3/6 से अन्तिम हल के लोप की अनुवृत्ति)

राज→राअ (कगचजतदपयवां प्रायो लोपः 2/2)

राअ/राय (प्राकृत में अ ध्वनि य में भी बदल जाती है)

37. आमन्त्रणे वा बिन्दुः 5/37

आमन्त्रणे (आमन्त्रण) 7/1 वा = विकल्प से बिन्दुः (बिन्दु) 1/1

आमन्त्रण में विकल्प से बिन्दु (होता है)।

राजन्→राअ शब्द के आमन्त्रण (संबोधन में) विकल्प से बिन्दु '' (होता है)

राअं /रायं(संबोधन एकवचन)

38. जस् - शस् - ङसां णो 5/38

जस्-शस्-ङसां णो { (ङसाम्) + (णो) }

{ (जस्-शस्-ङस्) 6/3 } णो (णो) 1/1

जस्, शस्, ङस् के स्थान पर **'णो'** (होता है)।

राजन्→राअ शब्द के जस् (प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय), शस् (द्वितीया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बहुवचन के प्रत्यय), ङस् (षष्ठी एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'णो'** होता है।

(राअ + जस्) = (राअ + णो) = **राआणो[1] (प्रथमा बहुवचन)**

(राअ + शस्) = (राअ + णो) = **राआणो[1] (द्वितीया बहुवचन)**

(राअ + ङस्) = (राअ + णो) = **राइणो[2] (षष्ठी एकवचन)**

1. सूत्र 5/44 से राअ → राआ हुआ है।
2. सूत्र 5/43 से राअ → राइ हुआ है।

39. शस एत् 5/39

शस एत् { (शसः) + (एत्) }

शसः (शस्) 6/1 एत् (एत्) 1/1

शस् के स्थान पर एत् → 'ए' (होता है)।

राजन् →राअ शब्द के शस् (द्वितीया बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर एत् →**'ए'** होता है।

(राअ + शस्) = (राअ + ए) = **राए (द्वितीया बहुवचन)**

40. आमो णं 5/40

आमो णं { (आमः) + (णं) }

आमः (आम्) 6/1 णं (णं) 1/1

आम् के स्थान पर **'णं'** (होता है)।

राजन् →राअ शब्द के आम् (षष्ठी बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'णं'** (होता है)।

(राअ + आम्) = (राअ + णं) = **राआणं[1] (षष्ठी बहुवचन)**

1. सूत्र 5/44 से राअ→राआ हुआ है।

41. टाणा 5/41

टाणा { (टा) - (णा) 1/1 }

टा के स्थान पर **'णा'** (होता है)।

राजन्→राअ शब्द के टा (तृतीया एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर 'णा' होता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(राअ + टा) = (राअ + णा) = **राइणा**[1] **(तृतीया एकवचन)**
1. सूत्र 5/43 से **राअ→राइ** हुआ है।

42. ङसश्च द्वित्वं वान्त्यलोपश्च 5/42

ङसश्च द्वित्वं वान्त्यलोपश्च {(ङसः) + (च)} {(द्वित्वम्)+(वा) +(अन्त्य) +(लोपः)+(च)}
ङसः (ङस्) 6/1 च = और द्वित्वम् (द्वित्व) 1/1 वा = विकल्प से { (अन्त्य) - (लोप) 1/1} च = और
ङस् का और (टा का) विकल्प से द्वित्व (होता है) और अन्त्य वर्ण का लोप (भी होता है)।
राजन् →राअ शब्द के ङस् (षष्ठी एकवचन) के **'णो'** और **टा** (तृतीया एकवचन) के **'णा'** का विकल्प से द्वित्व होता है और अन्त्य वर्ण का लोप भी होता है।
(राअ + ङस्) = (राअ + णो) = **रण्णो (षष्ठी एकवचन)**
(राअ + टा) = (राअ + णा) = **रण्णा (तृतीया एकवचन)**

43. इदद्वित्वे 5/43

इदद्वित्वे { (इत्) + (अ) + (द्वित्वे) }
इत् (इत्) 1/1 अ = नहीं द्वित्वे (द्वित्व) 7/1
द्वित्व नहीं होने पर इत्→ इ (होता है)।
राजन् →राअ शब्द के ङस् (षष्ठी एकवचन का प्रत्यय) और टा (तृतीया एकवचन का प्रत्यय) को द्वित्व न होने की स्थिति में अन्त्य वर्ण को इत्→इ होता है।
(राअ + ङस्) = (राअ + णो) = **राइणो**[1] **(षष्ठी एकवचन)**
(राअ + टा) = (राअ + णा) = **राइणा**[2] **(तृतीया एकवचन)**
1. सूत्र 5/38 से ङस् = णो हुआ है।
2. सूत्र 5/41 से टा = णा हुआ है।

44. आ णोणमोरङसि 5/44

आ णोणमोरङसि आ { (णो) + (णमोः) + (अ) + (ङसि) }

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आ (आ) 1/1 { (णो) - (णम्) 7/2 } अ = नहीं ङसि (ङस्) 7/1
णो और णम् परे होने पर **'आ'** (होता है) ङस् में नहीं।

राजन् → राअ शब्द के णो (प्रथमा और द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय) और णम् → णं (षष्ठी बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर अन्त्य अक्षर को 'आ' होता है परन्तु ङस् (षष्ठी एकवचन) में 'णो' प्रत्यय होने पर आ नहीं होता।

(राअ + जस्) = (राअ + णो) = **राआणो (प्रथमा बहुवचन)**
(राअ + शस्) = (राअ + णो) = **राआणो (द्वितीया बहुवचन)**
(राअ + आम्) = (राअ + णं) = **राआणं (षष्ठी बहुवचन)**
(राअ + ङस्) = (राअ + णो) = **राआणो नहीं बनेगा**

45. आत्मनोऽप्पाणो वा 5/45

आत्मनोऽप्पाणो { (आत्मनः) + (अप्पाणः) + (वा) }
आत्मनः (आत्मन्) 6/1 अप्पाणः (अप्पाण) 1/1 वा = विकल्प से
आत्मन् के स्थान पर विकल्प से अप्पाण भी (होता है)।

सुप् (सु से सुप् तक के विभक्तिबोधक प्रत्यय) परे होने पर आत्मन् **→अप्प** के स्थान पर विकल्प से अप्पाण भी (होता है)।

इस शब्द के रूप सभी विभक्तियों में अकारान्त शब्द की तरह चलेंगे।

46. इत्वद्वित्ववर्जं राजवदनादेशे 5/46

इत्वद्वित्ववर्जं राजवदनादेशे { (राजवत्) + (अन्) + (आदेशे) }
{ (इत्व) - (द्वित्व) - वर्जं = सिवाय}[1] राजवत् = राजन् के समान
अन् = नहीं आदेशे (आदेश) 7/1

इत्व, द्वित्व के सिवाय राजन् →राअ के समान (रूप) (चलेंगे) आदेश में नहीं।

इत्व (राइणा सूत्र-5/43) द्वित्व (रण्णा सूत्र-5/42) के सिवाय आत्मन्→अप्प के रूप राजन→राअ के समान चलेंगे आदेश में नहीं। अर्थात अप्पाण आदेश होने पर रूप 'देव' के समान चलेंगे।

1. समास के अन्त में वर्जं 'सिवाय' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। देखें संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सर्वनाम सूत्र

47. सर्वादेर्जस एत्वम् 6/1

सर्वादेर्जस एत्वम् { (सर्व) + (आदेः) + (जसः) + (एत्वम्) }

{ (सर्व) - (आदि) 5/1 } जसः (जस्) 6/1 एत्वम् (एत्व) 1 /1

सर्व → सव्व आदि से परे जस् के स्थान पर एत्व → **'ए'** (होता है)।

सर्व → सव्व आदि सर्वनामों से परे जस् (प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'ए'** होता है।

(सव्व + जस्) = (सव्व + ए) = **सव्वे** **(प्रथमा बहुवचन)**

(त + जस्) = (त + ए) = **ते** **(प्रथमा बहुवचन)**

(ज + जस्) = (ज + ए) = **जे** **(प्रथमा बहुवचन)**

(एत + जस्) = (एत + ए) = **एते** **(प्रथमा बहुवचन)**

(इम + जस्) = (इम + ए) = **इमे** **(प्रथमा बहुवचन)**

48. **ङेः स्सिंम्मित्थाः 6/2**

ङेः (ङि) 6/1 { (स्सिं) - (म्मि) - (त्थ) 1/3 }

ङि के स्थान पर **'स्सिं', 'म्मि'** और **'त्थ'** (होते हैं)।

सर्व → सव्व आदि सर्वनामों से परे ङि (सप्तमी एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'स्सिं'** , **'म्मि'** और **'त्थ'** होते हैं।

सप्तमी एकवचन

(सव्व + ङि) = (सव्व +स्सिं, म्मि, त्थ) = **सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वत्थ**

(त + ङि) = (त + स्सिं, म्मि, त्थ) = **तस्सिं, तम्मि, तत्थ**

(ज + ङि) = (ज + स्सिं, म्मि, त्थ) = **जस्सिं, जम्मि, जत्थ**

(एत + ङि) = (एत + स्सिं, म्मि, त्थ) = **एतस्सिं, एतम्मि, एत्थ**[1]

(इम + ङि) = (इम + स्सिं, म्मि)[2] = **इमस्सिं, इमम्मि**

1. सूत्र 6/21 से एतत्थ के त का लोप होकर **एत्थ** बनेगा।

2. सूत्र 6/17 से इमत्थ नहीं बनेगा।

49. **इदमेतद्किंयत्तद्भ्यः टाइणा वा 6/3**

इदमेतद्किंयत्तद्भ्यः टाइणा वा { (इदम्) + (एतत्) + (किं) + (यत्) +

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(तद्भ्यः) } टाइणा वा

{ (इदम्) - (एतत्) - (किं) - (यत्) - (तत्) 5/3 } {(टा)-(इणा) 1/1}

वा = विकल्प से

इदम्, एतत्, किं, यत्, तत् से परे टा के स्थान पर विकल्प से **'इणा'** (होता है)।

इदम् →इम, एतत् →एत, किं →क , यत् →ज, तत् →त से परे टा (तृतीया एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर विकल्प से **'इणा'** होता है।

(इम + टा) = (इम + इणा) = **इमिणा (तृतीया एकवचन)**
(एत + टा) = (एत + इणा) = **एतिणा (तृतीया एकवचन)**
(क + टा) = (क + इणा) = **किणा (तृतीया एकवचन)**
(ज + टा) = (ज + इणा) = **जिणा (तृतीया एकवचन)**
(त + टा) = (त + इणा) = **तिणा (तृतीया एकवचन)**

50. आम एसिं 6/4

आम एसिं { (आमः) + (एसिं) }

आमः (आम्) 6/1 एसिं (एसिं) 1/1

आम् के स्थान पर **'एसिं'** (होता है)।

इदम् →इम, एतत् →एत, किं →क , यत् →ज, तत् →त से परे आम् (षष्ठी बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर विकल्प से **'एसिं'** (होता है)।

(इम + आम्) = (इम + एसिं) = **इमेसिं (षष्ठी बहुवचन)**
(एत + आम्) = (एत + एसिं) = **एतेसिं (षष्ठी बहुवचन)**
(क + आम्) = (क + एसिं) = **केसिं (षष्ठी बहुवचन)**
(ज + आम्) = (ज + एसिं) = **जेसिं (षष्ठी बहुवचन)**
(त + आम्) = (त + एसिं) = **तेसिं (षष्ठी बहुवचन)**

51. किंयत्तद्भ्यो ङस आसः 6/5

किंयत्तद्भ्यो ङस आसः {(किं) + (यत्) + (तद्भ्यः) + (ङसः) + (आसः)}

{ (किं) - (यत्) - (तत्) 5/3} ङसः (ङस्) 6/1 आसः (आस) 1/1

किं, यत्, तत् से परे ङस् के स्थान पर **'आस'** (होता है)।

किं →क , यत्→ज, तत्→त से परे ङस् (षष्ठी एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर विकल्प से **'आस'** (होता है)।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(क + ङस्) ः (क + आस) ः **कास (षष्ठी एकवचन)**
(ज + ङस्) ः (ज + आस) ः **जास (षष्ठी एकवचन)**
(त + ङस्) ः (त + आस) ः **तास (षष्ठी एकवचन)**

52. ईदूभ्यः स्सा से 6/6

ईदूभ्यः (ईत्) 5/3 स्सा (स्सा) 1/1 से (से) 1/1
ईकारान्त शब्दों से परे **'स्सा'** और **'से'** (होते हैं)।
किं, यत्, तत् के ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों की, जी, ती से परे ङस् (षष्ठी एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर विकल्प से **'स्सा'** और **'से'** होते हैं।
(की + ङस्) ः (की + स्सा, से) ः **किस्सा[1], कीसे (षष्ठी एकवचन)**
(जी + ङस्) ः (जी + स्सा, से) ः **जिस्सा[1], जीसे (षष्ठी एकवचन)**
(ती + ङस्) ः (ती + स्सा, से) ः **तिस्सा[1], तीसे (षष्ठी एकवचन)**
1. संयुक्ताक्षर के कारण की, जी, ती ह्रस्व हुए हैं।(मनोरमा टीका के आधार पर)

53. ङेर्हिं 6/7

ङेर्हिं { (ङेः) + (हिं) }
ङेः (ङि) 6/1 हिं (हिं) 1/1
ङि के स्थान पर **'हिं'** (होता है)।
किं → क , यत् → ज, तत् → त से परे ङि (सप्तमी एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर विकल्प से 'हिं' होता है।
(क + ङि) ः (क + हिं) ः **कहिं (सप्तमी एकवचन)**
(ज + ङि) ः (ज + हिं) ः **जहिं (सप्तमी एकवचन)**
(त + ङि) ः (त + हिं) ः **तहिं (सप्तमी एकवचन)**

54. आहे इआ काले 6/8

आहे (आहे) 1/1 इआ (इआ) 1/1 काले (काल) 7/1
काल (अर्थ) में **'आहे'** और **'इआ'** (होते हैं)।
किं → क , यत् → ज, तत् → त से परे सप्तमी एकवचन में काल अर्थ में **'आहे'** और **'इआ'** होते हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(क + ङि) = (क + आहे, इआ) = **काहे, कइआ (सप्तमी एकवचन)**
(ज + ङि) = (ज + आहे, इआ) = **जाहे, जइआ (सप्तमी एकवचन)**
(त + ङि) = (त + आहे, इआ) = **ताहे, तइआ (सप्तमी एकवचन)**

55. त्तो दो ङसेः 6/9

त्तो (त्तो) 1/1 दो (दो) 1/1 ङसेः (ङसि) 6/1
ङसि के स्थान पर **'त्तो'** और **'दो'** (होते हैं)।
किं→क, यत्→ज, तत्→त से परे ङसि (पंचमी एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'त्तो'** और **'दो'** (होते हैं)।
(क + ङसि) = (क + त्तो, दो) = **कत्तो, कदो (पंचमी एकवचन)**
(ज + ङसि) = (ज + त्तो, दो) = **जत्तो, जदो (पंचमी एकवचन)**
(त + ङसि) = (त + त्तो, दो) = **तत्तो, तदो (पंचमी एकवचन)**

56. तद ओश्च 6/10

तद ओश्च { (तदः→ततः) + (ओः) + (च) }
ततः (तत्) 5/1 ओः (ओ) 1/1 च = और
तत् से परे **'ओ'** और (त्तो, दो होते हैं)।
पुल्लिंग सर्वनाम तत् → त से परे ङसि (पंचमी एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'ओ'** और **'त्तो'**, **'दो'** होते हैं।
(त + ङसि) = (त + ओ, त्तो,दो) = **तो, तत्तो, तदो (पंचमी एकवचन)**

57. ङ्सा से 6/11

ङसा (ङस्) 3/1 से (से) 1/1
ङस् सहित **'से'** (होता है)।
पुल्लिंग सर्वनाम तत् →त से परे ङस् (षष्ठी एकवचन के प्रत्यय) सहित विकल्प से **'से'** होता है।
(त + ङस्) = **से (षष्ठी एकवचन)**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

58. **आमा सिं 6/12**

आमा (आम्) 3/1 सिं (सिं) 1/1

आम् सहित **'सिं'** (होता है)।

पुल्लिंग सर्वनाम तत्→त से परे आम् (षष्ठी बहुवचन के प्रत्यय) सहित विकल्प से **'सिं'** होता है।

(त + आम्) = **सिं (षष्ठी बहुवचन)**

59. **किमः कः 6/13**

किमः (किम्) 6/1 कः (क) 1/1

किम् के स्थान पर **'क'** (होता है)।

सुप् (प्रथमा से सप्तमी तक के विभक्तिबोधक प्रत्यय) परे होने पर किम् के स्थान पर **'क'** होता है।

60. **इदमः इमः 6/14**

इदमः (इदम्) 6/1 इमः (इम) 1/1

इदम् के स्थान पर **'इम'** (होता है)।

सुप् (प्रथमा से सप्तमी तक के विभक्तिबोधक प्रत्यय) परे होने पर इदम् के स्थान पर **'इम'** होता है।

61. **स्सस्सिमोरद्वा 6/15**

स्सस्सिमोरद्वा { (स्स) + (स्सिमोः) + (अत्) + (वा) }

{ (स्स) - (स्सिम्) 7/2} अत् (अत्) 1/1 वा = विकल्प से

स्स और स्सिम् → स्सिं परे होने पर अत् → **अ** विकल्प से (होता है)।

स्स (इम का षष्ठी एकवचन का प्रत्यय) और स्सिं (इम का सप्तमी एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर इम के स्थान पर विकल्प से **'अ'** होता है।

(इम + स्स) = **अस्स (षष्ठी एकवचन)**

(इम + स्सिं) = **अस्सिं (सप्तमी एकवचन)**

62. **डेर्देन हः 6/16**

डेर्देन हः { (डेः) + (देन) } हः

डेः (डि) 6/1 देन (द) 3/1 हः (ह) 1/1

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

'द' सहित ङि के स्थान पर **'ह'** (होता है)।

इदम् शब्द के 'द' सहित ङि (सप्तमी एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर विकल्प से **'ह'** होता है।

(इदम्[1] + ङि) ≒ इह **(सप्तमी एकवचन)**

1. (सूत्र 3/2 'अधो मनयाम्' से पदान्त म् , न् , य् का लोप होता है)

63. न त्थः 6/17

न ≒ नहीं त्थः (त्थ) 1/1

'त्थ' नहीं (होता)।

इदम् शब्द से परे ङि (सप्तमी एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर 'त्थ' प्रत्यय नहीं होता।

(इम + त्थ) ≒ इमत्थ नहीं बनेगा।

64. नपुंसके स्वमोरिदमिणमिणमो 6/18

नपुंसके स्वमोरिदमिणमिणमो { (सु) + (अमोः) + (इदम्) + (इणम्) + (इणमो) }

नपुंसके (नपुंसक) 7/1 { (सु) - (अम्) 7/2} इदम् (इदम्) 1/1

इणम् (इणम्) 1/1 इणमो (इणमो) 1/1

नपुंसकलिंग में सु और अम् परे होने पर इदम् →**'इदं'**, इणम् →**'इणं'**, **'इणमो'** (होते हैं)।

इदम् शब्द के नपुंसकलिंग में सु (प्रथमा एकवचन का प्रत्यय) और अम् (द्वितीया एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर इदम् → इम व विभक्तिप्रत्ययों सहित[1] **'इदं'**, **'इणं'**, **'इणमो'** होते हैं।

(इम + सु) ≒ **इदं, इणं, इणमो (प्रथमा एकवचन)**

(इम + अम्) ≒ **इदं, इणं, इणमो (द्वितीया एकवचन)**

1. मनोरमा टीका के आधार पर।

65. एतदः सावोत्त्वं वा 6/19

एतदः सावोत्त्वं वा एतदः { (सौ) + (ओत्त्वम्) + (वा) }

एतदः → एततः (एतत्) 5/1 सौ (सु) 7/1 ओत्त्वम् (ओत्त्व) 1/1

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वा = विकल्प से

एतत् से परे सु होने पर विकल्प से ओत्त्वं → **'ओ'** (होता है)।

एतत् → एत से परे सु (प्रथमा एकवचन का प्रत्यय) होने पर विकल्प से **'ओ'** होता है।

(एत + सु) = (एत + ओ) = **एसो[1], एस[2] (प्रथमा एकवचन)**

1. सूत्र 6/22 से एत के 'त' का 'स' होगा।
2. दीप्ति व्याख्या के अनुसार विकल्प से 'एस' रूप बनता है।

66. त्तो ङसेः 6/20

त्तो (त्तो) 1/1 ङसेः (ङसि) 6/1

ङसि के स्थान पर 'त्तो' (होता है)।

एतत् → एत से परे ङसि (पंचमी एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर **'त्तो'** होता है।

(एत + ङसि) = (एत + त्तो) = **एत्तो[1] (पंचमी एकवचन)**

1. सूत्र 6/21 से एत के 'त' का लोप होगा।

67. त्तोत्थयोस्तलोपः 6/21

त्तोत्थयोस्तलोपः { (त्तो) + (त्थयोः) + (त) + (लोपः) }

{ (त्तो) - (त्थ) 7/2 } { (त) - (लोप) 1/1 }

त्तो और त्थ परे होने पर **'त'** का लोप (होता है)।

एतत् → एत से परे त्तो (पंचमी एकवचन में प्रयुक्त प्रत्यय) और त्थ (सप्तमी एकवचन में प्रयुक्त प्रत्यय) होने पर एत के **'त'** का **लोप** हो जाता है।

(एत + त्तो) = **एत्तो (पंचमी एकवचन)**

(एत + त्थ) = **एत्थ (सप्तमी एकवचन)**

68. तदेतदोः (तस्य)[1] सः सावनपुंसके 6/22

तदेतदोः सः सावनपुंसके { (तत्) + (एतदोः→एततोः) } सः { (सौ) + (अ) + (नपुंसके) }

{ (तत्) - (एतत्) 7/2 } सः (स) 1/1 सौ (सु) 7/1

अ = नहीं नपुंसके (नपुंसक) 7/1

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तत् और एतत् के परे सु होने पर **'स'** (होता है) नपुंसकलिंग में नहीं।
तत् → त और एतत् → एत के परे सु (प्रथमा एकवचन का प्रत्यय) होने पर 'त' का 'स' होता है परन्तु नपुंसकलिंग में नहीं होता।
(त + सु) = (त + ओ) = **सो (प्रथमा एकवचन)**
(एत + सु) = (एत + ओ) = **एसो (प्रथमा एकवचन)**

1. मनोरमा टीका के आधार पर 'तस्य' का निवेश होना चाहिए। प्राकृत प्रकाश, डॉ. श्रीकान्त पाण्डेय, पृ. 108 ।

69. अदसो दो मुः 6/23

अदसो दो मुः { (अदसः) + (दः) + (मुः) }
अदसः (अदस्) 6/1 दः (द) 1/1 मुः (मु) 1/1
अदस् का द **'मु'** (हो जाता है)।
सुप् (प्रथमा से सप्तमी तक के विभक्तिबोधक प्रत्यय) परे होने पर अदस् का द **'मु'** हो जाता है।
अदस् → अद[1] → अमु
'अमु' शब्द के रूप उकारान्त शब्दों की भांति चलेंगे।
1. सूत्र 4/6 'अन्त्यहलः' से स् का लोप हुआ।

70. हश्च सौ 6/24

हश्च सौ { (हः) + (च) } सौ
हः (ह) 1/1 च = समुच्चयबोधक अव्यय सौ (सु) 7/1
सु परे होने पर **'ह'** (होता है)।
अदस् (पु., नपुं, स्त्री.) के परे सु (प्रथमा एकवचन का प्रत्यय) होने पर 'द' के स्थान पर 'ह' होता है। (और पूर्व सूत्रानुसार अमु के पु. स्त्री. में अमू और नपुं में अमुं तो बनेंगे ही)
(अदस् + सु)[1] = अदस्→अद→ अह (प्रथमा एकवचन) (पु., नपुं, स्त्री.)
1. मनोरमा टीका के आधार पर 'सु' का लोप हो जाता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

71. पदस्य 6/25

पदस्य (पद) 6/1

पद के स्थान पर (होते हैं)।

पद से तात्पर्य प्रातिपदिक (विभक्तिचिह्न के जुड़ने से पूर्व संज्ञा शब्द) और प्रत्यय के संयोग से निष्पन्न होनेवाले शब्द से है।[1] आगे आनेवाले सर्वनाम मूलशब्द व विभक्तिचिह्नों से मिलकर आदेशरूप होंगे। जैसे - तुम्ह+ सु = तुं, तुमं पद कहे गये हैं।

1. प्राकृतप्रकाशः, डॉ. श्रीकान्त पाण्डेय, पृष्ठ - 110 का फुटनोट।

72. युष्मदस्तं तुमं 6/26

युष्मदस्तं तुमं { (युष्मदः) + (तं) } तुमं

युष्मदः (युष्मद्) 6/1 तं (तं) 1/1 तुमं (तुमं) 1/1

युष्मद् शब्द के (सु परे होने पर) **'तं'** और **'तुमं'** (होते हैं)।

युष्मद् → तुम्ह शब्द के सु (प्रथमा एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर (तुम्ह और सु के स्थान पर) **'तं'** और **'तुमं'** होते हैं।

(तुम्ह + सु) = **तं, तुमं (प्रथमा एकवचन)**

73. तुं चामि 6/27

तुं चामि तुं { (च) + (अमि) }

तुं (तुं) 1/1 च = और अमि (अम्) 7/1

अम् परे होने पर **तुं** और ('तं', 'तुमं') (होते हैं)।

युष्मद् → तुम्ह शब्द के अम् (द्वितीया एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर (तुम्ह और अम् के स्थान पर) **'तुं'** और **'तं'**, **'तुमं'** होते हैं।

(तुम्ह + अम्) = **तुं, तं, तुमं (द्वितीया एकवचन)**

74. तुज्झे तुम्हे जसि 6/28

तुज्झे (तुज्झे) 1/1 तुम्हे (तुम्हे) 1/1 जसि (जस्) 7/1

जस् परे होने पर **'तुज्झे'**, **'तुम्हे'** (होते हैं)।

युष्मद् →तुम्ह शब्द के जस् (प्रथमा बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर (तुम्ह और जस् के स्थान पर) **'तुज्झे'** और **'तुम्हे'** होते हैं।

(तुम्ह + जस्) = **तुज्झे, तुम्हे (प्रथमा बहुवचन)**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

75. वो च शसि 6/29

वो (वो) 1/1 च = और शसि (शस्) 7/1

शस् परे होने पर **'वो'** और ('तुज्झे' , 'तुम्हे') (होते हैं)।

युष्मद् →तुम्ह शब्द के शस् (द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर (तुम्ह और शस् के स्थान पर) **'वो'** और **'तुज्झे', 'तुम्हे'** होते हैं।

(तुम्ह +शस्) = **वो, तुज्झे, तुम्हे (द्वितीया बहुवचन)**

76. टाङ्योस्तइ तए तुमए तुमे 6/30

टाङ्योस्तइ तए तुमए तुमे { (टा) + (ङ्योः) + (तइ) } तए तुमए तुमे { (टा) - (ङि) 7/2 } तइ (तइ) 1/1 तए (तए) 1/1

तुमए (तुमए) 1/1 तुमे (तुमे) 1/1

टा और ङि परे होने पर **'तइ', 'तए', 'तुमए'** और **'तुमे'** (होते हैं)।

युष्मद् → तुम्ह शब्द के टा (तृतीया एकवचन का प्रत्यय) और ङि (सप्तमी एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर (तुम्ह और टा , तुम्ह और ङि के स्थान पर) **'तइ', 'तए', 'तुमए'** और **'तुमे'** होते हैं।

(तुम्ह + टा) = **तइ, तए, तुमए, तुमे (तृतीया एकवचन)**

(तुम्ह + ङि) = **तइ, तए, तुमए, तुमे (सप्तमी एकवचन)**

77. ङसि तुव - तुमो -तुह -तुज्झ - तुम्ह - तुम्माः 6/31

ङसि (ङस्) 7/1 { (तुव)-(तुमो)-(तुह)-(तुज्झ)-(तुम्ह)-(तुम्म) 1/3 }

ङस् परे होने पर **'तुव', 'तुमो', 'तुह', 'तुज्झ', 'तुम्ह', 'तुम्म'** (होते हैं)।

युष्मद् → तुम्ह शब्द के ङस् (षष्ठी एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर (तुम्ह और ङस् के स्थान पर) **'तुव', 'तुमो', 'तुह', 'तुज्झ', 'तुम्ह', 'तुम्म'** होते हैं।

(तुम्ह + ङस्) = **तुव, तुमो, तुह, तुज्झ, तुम्ह, तुम्म (षष्ठी एकवचन)**

78. आङि च ते दे 6/32

आङि (आङ्) 7/1 च = और ते (ते) 1/1 दे (दे) 1/1

आङ् में **'ते', 'दे'** (होते हैं) और।

युष्मद् → तुम्ह शब्द के आङ् (टा = आङ् अर्थात् तृतीया एकवचन का

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत्यय) परे होने पर **'ते'**, **'दे'** होते हैं और ङस् (षष्ठी एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर (तुम्ह और ङस् के स्थान पर) **'ते'**, **'दे'** होते हैं।
(तुम्ह + आङ्) = **ते, दे (तृतीया एकवचन)**
(तुम्ह + ङस्) = **ते, दे (षष्ठी एकवचन)**

79. तुमाइ च 6/33

तुमाइ (तुमाइ) 1/1 च = और
'तुमाइ' और (ते, दे होते हैं)।
युष्मद् → तुम्ह शब्द के आङ् = टा अर्थात् तृतीया एकवचन का प्रत्यय परे होने पर (तुम्ह और आङ् के स्थान पर) **'तुमाइ'** और **'ते'** **'दे'** होते हैं।
(तुम्ह + आङ्) = **तुमाइ, ते, दे (तृतीया एकवचन)**

80. तुज्झेहिं तुम्हेहिं तुम्मेहिं भिसि 6/34

तुज्झेहिं (तुज्झेहिं) 1/1 तुम्हेहिं (तुम्हेहिं) 1/1 तुम्मेहिं (तुम्मेहिं) 1/1 भिसि (भिस्) 7/1
भिस् परे होने पर **'तुज्झेहिं'**, **'तुम्हेहिं'**, **'तुम्मेहिं'** (होते हैं)।
युष्मद् → तुम्ह शब्द के भिस् (तृतीया बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर (तुम्ह और भिस् के स्थान पर) **'तुज्झेहिं'**, **'तुम्हेहिं'**, **'तुम्मेहिं'** होते हैं।
(तुम्ह + भिस्) = **तुज्झेहिं, तुम्हेहिं, तुम्मेहिं (तृतीया बहुवचन)**

81. ङसौ तत्तो तइत्तो तुमादो तुमादु तुमाहि 6/35

ङसौ (ङसि) 7/1 तत्तो (तत्तो) 1/1 तइत्तो (तइत्तो) 1/1 तुमादो (तुमादो) 1/1 तुमादु (तुमादु) 1/1 तुमाहि (तुमाहि) 1/1
ङसि परे होने पर **'तत्तो'**, **'तइत्तो'**, **'तुमादो'**, **'तुमादु'**, **'तुमाहि'** (होते हैं)
युष्मद् → तुम्ह शब्द के ङसि (पंचमी एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर (तुम्ह और ङसि के स्थान पर) **'तत्तो'**, **'तइत्तो'**, **'तुमादो'**, **'तुमादु'**, **'तुमाहि'** होते हैं।
(तुम्ह + ङसि) = **तत्तो, तइत्तो, तुमादो, तुमादु, तुमाहि (पंचमी एकवचन)**

82. तुम्हाहिन्तो तुम्हासुन्तो भ्यसि 6/36

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तुम्हाहिन्तो (तुम्हाहिन्तो) 1/1 तुम्हासुन्तो (तुम्हासुन्तो) 1/1
भ्यसि (भ्यस्) 7/1
भ्यस् परे होने पर **'तुम्हाहिन्तो', 'तुम्हासुन्तो'** (होते हैं)।
युष्मद् → तुम्ह शब्द के भ्यस् (पंचमी बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर (तुम्ह और भ्यस् के स्थान पर) **'तुम्हाहिन्तो', 'तुम्हासुन्तो'** होते हैं।
(तुम्ह + भ्यस्) = **तुम्हाहिन्तो, तुम्हासुन्तो (पंचमी बहुवचन)**

83. वो भे तुज्झाणं तुम्हाणमामि 6/37

वो भे तुज्झाणं तुम्हाणमामि वो भे तुज्झाणं { (तुम्हाणम्) + (आमि) }
वो (वो) 1/1 भे (भे) 1/1 तुज्झाणं (तुज्झाणं) 1/1
तुम्हाणम् → तुम्हाणं (तुम्हाणं) 1/1 आमि (आम्) 7/1
आम् परे होने पर **'वो', 'भे', 'तुज्झाणं', 'तुम्हाणं'** (होते हैं)।
युष्मद् → तुम्ह शब्द के आम् (षष्ठी बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर (तुम्ह और आम् के स्थान पर) **'वो', 'भे', 'तुज्झाणं', 'तुम्हाणं'** होते हैं।
(तुम्ह + आम्) = **वो, भे, तुज्झाणं, तुम्हाणं (षष्ठी बहुवचन)**

84. ङौ तुमम्मि तुमस्सिं 6/38

ङौ (ङि) 7/1 तुमम्मि (तुमम्मि) 1/1 तुमस्सिं (तुमस्सिं) 1/1
ङि परे होने पर **'तुमम्मि', 'तुमस्सिं'** (होते हैं)।
युष्मद् → तुम्ह शब्द के ङि (सप्तमी एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर (तुम्ह और ङि के स्थान पर) **'तुमम्मि', 'तुमस्सिं'** होते हैं।
(तुम्ह + ङि) = **तुमम्मि, तुमस्सिं (सप्तमी एकवचन)**

85. तुज्झेसु तुम्हेसु सुपि 6/39

तुज्झेसु (तुज्झेसु) 1/1 तुम्हेसु (तुम्हेसु) 1/1 सुपि (सुप्) 7/1
सुप् परे होने पर **'तुज्झेसु', 'तुम्हेसु'** (होते हैं)।
युष्मद् → तुम्ह शब्द के सुप् (सप्तमी बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर (तुम्ह और सुप् के स्थान पर) **'तुज्झेसु', 'तुम्हेसु'** होते हैं।
(तुम्ह + सुप्) = **तुज्झेसु, तुम्हेसु (सप्तमी बहुवचन)**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

86. अस्मदो हमहमहअं सौ 6/40

अस्मदो हमहमहअं सौ { (अस्मदः) + (हम्) + (अहम्) + (अहअं) } सौ

अस्मदः (अस्मद्) 6/1 हम् → हं (हं) 1/1 अहम् → अहं (अहं) 1/1

अहअं (अहअं) 1/1 सौ (सु) 7/1

अस्मद् → अम्ह के सु परे होने पर **'हं', 'अहं', 'अहअं'** (होते हैं)।

अस्मद् → अम्ह के सु (प्रथमा एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर (अम्ह और सु के स्थान पर) **'हं', 'अहं', 'अहअं'** होते हैं।

(अम्ह + सु) = **हं, अहं, अहअं (प्रथमा एकवचन)**

87. अहम्मिरमि च 6/41

अहम्मिरमि च { (अहम्मिः) + (अमि) } च

अहम्मिः (अहम्मि) 1/1 अमि (अम्) 7/1 च = और

अम् परे होने पर **'अहम्मि'** (होता है) और।

अस्मद् → अम्ह के अम् (द्वितीया एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर 'अहम्मि' होता है और सु (प्रथमा एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर भी (अम्ह और सु, अम्ह और अम् के स्थान पर) **'अहम्मि'** होता है।

(अम्ह + अम्) = **अहम्मि (द्वितीया एकवचन)**

(अम्ह + सु) = **अहम्मि (प्रथमा एकवचन)**

88. मं ममं 6/42

मं (मं) 1/1 ममं (ममं) 1/1

'मं', 'ममं' (होता है)।

अस्मद् → अम्ह के अम् (द्वितीया एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर (अम्ह और अम् के स्थान पर) **'मं', 'ममं'** होता है।

(अम्ह + अम्) = **मं, ममं (द्वितीया एकवचन)**

89. अम्हे जश्शसोः 6/43

अम्हे जश्शसोः अम्हे { (जस्) + (शसोः) }

अम्हे (अम्हे) 1/1 { (जस्) + (शस्) 7/2 }

जस्, शस् परे होने पर **'अम्हे'** (होता है)।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अस्मद् → अम्ह के जस् (प्रथमा बहुवचन का प्रत्यय) , शस् (द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर (अम्ह और जस्, अम्ह और शस् के स्थान पर) **'अम्हे'** (होता है)।

(अम्ह + जस्) = **अम्हे (प्रथमा बहुवचन)**

(अम्ह + शस्) = **अम्हे (द्वितीया बहुवचन)**

90. णो शसि 6/44

णो (णो) 1/1 शसि (शस्) 7/1

शस् परे होने पर **'णो'** (होता है)।

अस्मद् →अम्ह के शस् (द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर (अम्ह और शस् के स्थान पर) **'णो'** होता है।

(अम्ह + शस्) = **णो (द्वितीया बहुवचन)**

91. आङि मे ममाइ 6/45

आङि (आङ्) 7/1 मे (मे) 1/1 ममाइ (ममाइ) 1/1

आङ् परे होने पर **'मे', 'ममाइ'** (होते हैं)।

अस्मद् →अम्ह के आङ् (तृतीया एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर (अम्ह और आङ् के स्थान पर) **'मे', 'ममाइ'** होते हैं।

(अम्ह + आङ्) = **मे, ममाइ (तृतीया एकवचन)**

92. ङौ च मइ मए 6/46

ङौ (ङि) 7/1 च = और मइ (मइ) 1/1 मए (मए) 1/1

ङि परे होने पर **'मइ', 'मए'** (होते हैं) और।

अस्मद् → अम्ह के ङि (सप्तमी एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर (अम्ह और ङि के स्थान पर) 'मइ', 'मए' होते हैं और तृतीया एकवचन में भी **'मइ', 'मए'** होते हैं।

(अम्ह + ङि) = **मइ, मए (सप्तमी एकवचन)**

(अम्ह + आङ्) = **मइ, मए (तृतीया एकवचन)**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

93. अम्हेहिं भिसि 6/47

अम्हेहिं (अम्हेहिं) 1/1 भिसि (भिस्) 7/1

भिस् परे होने पर **'अम्हेहिं'** (होता है)।

अस्मद् → अम्ह के भिस् (तृतीया बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर (अम्ह और भिस् के स्थान पर) **'अम्हेहिं'** होता है।

(अम्ह + भिस्) = **अम्हेहिं (तृतीया बहुवचन)**

94. मत्तो मइत्तो ममादो ममादु ममाहि ङसौ 6/48

मत्तो (मत्तो) 1/1 मइत्तो (मइत्तो) 1/1 ममादो (ममादो) 1/1

ममादु (ममादु) 1/1 ममाहि (ममाहि) 1/1 ङसौ (ङसि) 7/1

ङसि परे होने पर **'मत्तो', 'मइत्तो', 'ममादो', 'ममादु', 'ममाहि'** (होते हैं)।

अस्मद्→अम्ह के ङसि (पंचमी एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर (अम्ह और ङसि के स्थान पर) **'मत्तो', 'मइत्तो', 'ममादो', 'ममादु', 'ममाहि'** होते हैं।

(अम्ह + ङसि) = **मत्तो, मइत्तो, ममादो, ममादु, ममाहि (पंचमी एकवचन)**

95. अम्हाहिन्तो अम्हासुन्तो भ्यसि 6/49

अम्हाहिन्तो (अम्हाहिन्तो) 1/1 अम्हासुन्तो (अम्हासुन्तो) 1/1

भ्यसि (भ्यस्) 7/1

भ्यस् परे होने पर **'अम्हाहिन्तो', 'अम्हासुन्तो'** (होते हैं)।

अस्मद् →अम्ह के भ्यस् (पंचमी बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर (अम्ह और भ्यस् के स्थान पर) **'अम्हाहिन्तो', 'अम्हासुन्तो'** होते हैं।

(अम्ह + भ्यस्) = **अम्हाहिन्तो, अम्हासुन्तो (पंचमी बहुवचन)**

96. मे मम मह मज्झ ङसि 6/50

मे (मे) 1/1 मम (मम) 1/1 मह (मह) 1/1 मज्झ (मज्झ) 1/1

ङसि (ङस्) 7/1

ङस् परे होने पर **'मे', 'मम', 'मह', 'मज्झ'** (होते हैं)।

अस्मद् → अम्ह के ङस् (षष्ठी एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर (अम्ह और ङस् के स्थान पर) **'मे', 'मम', 'मह', 'मज्झ'** होते हैं।

(अम्ह + ङस्) = **मे, मम, मह, मज्झ (षष्ठी एकवचन)**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

97. **मज्झ णो अम्ह अम्हाणमम्हे आमि 6/51**

मज्झ णो अम्ह अम्हाणमम्हे आमि मज्झ णो अम्ह { (अम्हाणम्) +(अम्हे) } आमि

मज्झ (मज्झ) 1/1 णो (णो) 1/1 अम्ह (अम्ह) 1/1

अम्हाणम् → अम्हाणं (अम्हाणं) 1/1 अम्हे (अम्हे) 1/1

आमि (आम्) 7/1

आम् परे होने पर **'मज्झ', 'णो', 'अम्ह', 'अम्हाणं', 'अम्हे'** (होते हैं)।

अस्मद् → अम्ह के आम् (षष्ठी बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर (अम्ह और आम् के स्थान पर) **'मज्झ', 'णो', 'अम्ह', 'अम्हाणं'; 'अम्हे'** होते हैं।

(अम्ह + आम्) = **मज्झ, णो, अम्ह, अम्हाणं, अम्हे (षष्ठी बहुवचन)**

98. **ङौ ममम्मि ममस्सिं 6/52**

ङौ (ङि) 7/1 ममम्मि (ममम्मि) 1/1 ममस्सिं (ममस्सिं) 1/1

ङि परे होने पर **'ममम्मि', 'ममस्सिं'** (होते हैं)।

अस्मद् → अम्ह के ङि (सप्तमी एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर (अम्ह और ङि के स्थान पर) **'ममम्मि', 'ममस्सिं'** होते हैं।

(अम्ह + ङि) = **ममम्मि, ममस्सिं (सप्तमी एकवचन)**

99. **अम्हेसु सुपि 6/53**

अम्हेसु (अम्हेसु) 1/1 सुपि (सुप्) 7/1

सुप् परे होने पर **'अम्हेसु'** (होता है)।

अस्मद् → अम्ह के सुप् (सप्तमी बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर (अम्ह और सुप के स्थान पर) **'अम्हेसु'** होता है।

(अम्ह + सुप्) = **अम्हेसु (सप्तमी बहुवचन)**

100. **द्वेर्दो 6/54**

द्वेर्दो { (द्वेः) + (दो) }

द्वेः (द्वि) 6/1 दो (दो) 1/1

द्वि के स्थान पर **'दो'** (होता है)।

विभक्ति सम्बन्धी कोई भी प्रत्यय परे रहने पर द्वि के स्थान पर **'दो'** (होता है)।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्वि → दो

इस 'दो' शब्द में 6/60 **'शेषोऽदन्तवत्'** सूत्र के अनुसार अकारान्त शब्दों के समान प्रत्यय लग जाएंगे। (मनोरमा टीका के आधार पर)

प्रथमा बहुवचन - **दुवे, दोणि (6/57)**
द्वितीया बहुवचन - **दुवे, दोणि (6/57)**
तृतीया बहुवचन - **दोहिं (6/60, 5/5)**
चतुर्थी व षष्ठी बहुवचन - **दोण्हं (6/59)**
पंचमी बहुवचन - **दोहिन्तो, दोसुन्तो (6/60, 5/7)**
सप्तमी बहुवचन - **दोसु (6/60, 5/10)**

101. त्रेस्ति 6/55

त्रेस्ति { (त्रेः) + (ति) }

त्रेः (त्रि) 6/1 ति (ति) 1/1

त्रि के स्थान पर 'ति' (होता है)

विभक्ति सम्बन्धी कोई भी प्रत्यय परे रहने पर त्रि के स्थान पर **'ति'** होता है।

त्रि → ति

इस 'ति' शब्द में 6/60 **'शेषोऽदन्तवत्'** सूत्र के अनुसार अकारान्त शब्दों के समान प्रत्यय लग जाएंगे। (मनोरमा टीका के आधार पर)

प्रथमा बहुवचन - **तिण्णि (6/56)**
द्वितीया बहुवचन - **तिण्णि (6/56)**
तृतीया बहुवचन - **तीहिं (6/60, 5/5, 5/18)**
चतुर्थी व षष्ठी बहुवचन - **तिण्हं (6/59)**
पंचमी बहुवचन - **तीहिन्तो, तीसुन्तो (6/60, 5/7, 5/12)**
सप्तमी बहुवचन - **तीसु (6/60, 5/18, 5/10)**

102. तिण्णि जश्शस्भ्याम् 6/56

तिण्णि जश्शस्भ्याम् तिण्णि {(जस्) + (शस्भ्याम्)}

तिण्णि (तिण्णि) 1/1 { (जस्) - (शस्) 3/2}

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जस्, शस् सहित **'तिण्णि'** (होता है)।

ति शब्द के जस् (प्रथमा बहुवचन का प्रत्यय), शस् (द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय) सहित **'तिण्णि'** होता है।

(ति + जस्) = **तिण्णि (प्रथमा बहुवचन)**

(ति + शस्) = **तिण्णि (द्वितीया बहुवचन)**

103. द्वेर्दुवे दोणि वा 6/57

द्वेर्दुवे दोणि वा { (द्वेः) + (दुवे) } दोणि वा

द्वेः (द्वि) 6/1 दुवे (दुवे) 1/1 दोणि (दोणि) 1/1 वा = विकल्प से

द्वि शब्द के (जस्, शस् सहित) विकल्प से **'दुवे', 'दोणि'** (होते हैं)।

द्वि शब्द के जस् (प्रथमा बहुवचन का प्रत्यय), शस् (द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय) सहित विकल्प से **'दुवे', 'दोणि'** होते हैं।

(दो + जस्) = **दुवे, दोणि (प्रथमा बहुवचन)**

(दो + शस्) = **दुवे, दोणि (द्वितीया बहुवचन)**

104. चतुरश्चत्तारो चत्तारि 6/58

चतुरश्चत्तारो चत्तारि { (चतुरः) + (चत्तारो) } चत्तारि

चतुरः (चतुर्) 6/1 चत्तारो (चत्तारो) 1/1 चत्तारि (चत्तारि) 1/1

चतुर् शब्द के (जस्, शस् सहित) **'चत्तारो', 'चत्तारि'** (होते हैं)।

चतुर् → चतु शब्द के जस् (प्रथमा बहुवचन का प्रत्यय), शस् (द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय) सहित **'चत्तारो', 'चत्तारि'** होते हैं।

(चतु + जस्) = **चत्तारो, चत्तारि (प्रथमा बहुवचन)**

(चतु + शस्) = **चत्तारो, चत्तारि (द्वितीया बहुवचन)**

105. एषामामो ण्हं 6/59

एषामामो ण्हं { (एषाम्) + (आमः) + (ण्हं) }

एषाम् (इदम्) 6/3 आमः (आम्) 6/1 ण्हं (ण्हं) 1/1

इदम् (इन सब) के आम् के स्थान पर **'ण्हं'** (होता है)।

इन सबके (द्वि, ति, चतुर् के) आम् (षष्ठी बहुवचन का प्रत्यय) के स्थान पर **'ण्हं'** होता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(दो + आम्) = **दोण्हं (षष्ठी बहुवचन)**
(ति + आम्) = **तिण्हं (षष्ठी बहुवचन)**
(चतु + आम्) = **चतुण्हं (षष्ठी बहुवचन)**

106. शेषोऽदन्तवत् 6/ 60

शेषोऽदन्तवत् { (शेषः) + (अदन्तवत्) }
शेषः (शेष) 1/1 अदन्तवत् = अदन्त की तरह
शेष (रूप) अकारान्त की तरह (चलेंगे)।

अकारान्त शब्दों के अतिरिक्त आकारान्त, इकारान्त, उकारान्त आदि शब्दों के जिस विभक्ति, वचन के प्रत्यय पूर्व में नहीं बताये गये हैं, उस विभक्ति व वचन में अकारान्त शब्दों के प्रत्यय लगते हैं। शब्दरूप निम्न प्रकार होंगे -

जस् (प्रथमा बहुवचन) - कहा, मई, लच्छी, धेणू , बहू

अम् (द्वितीया एकवचन) - हरिं , गामणीं, साहुं, सयंभूं, वारिं, महुं, कहं, मइं, लच्छिं, धेणुं, बहुं

भिस् (तृतीया बहुवचन) - कहाहिं, मईहिं, लच्छीहिं, धेणूहिं, बहूहिं

ङसि (पंचमी एकवचन) -हरीदो, हरीदु, हरीहि, गामणीदो, गामणीदु, गामणीहि, साहूदो, साहूदु,साहूहि, सयंभूदो,सयंभूदु ,सयंभूहि, वारीदो, वारीदु,वारीहि, महूदो, महूदु, महूहि, कहादो, कहादु, कहाहि, मईदो, मईदु, मईहि, लच्छीदो, लच्छीदु, लच्छीहि, धेणूदो, धेणूदु, धेणूहि, बहूदो, बहूदु, बहूहि

भ्यस् (पंचमी बहुवचन) - हरीहिन्तो, हरीसुन्तो, गामणीहिन्तो, गामणीसुन्तो, साहूहिन्तो, साहूसुन्तो, सयंभूहिन्तो, सयंभूसुन्तो, वारीहिन्तो, वारीसुन्तो, महूहिन्तो, महूसुन्तो, कहाहिन्तो, कहासुन्तो, मईहिन्तो, मईसुन्तो, लच्छीहिन्तो, लच्छीसुन्तो, धेणूहिन्तो, धेणूसुन्तो, बहूहिन्तो, बहूसुन्तो

ङस् (षष्ठी एकवचन) - हरिस्स, गामणीस्स, साहुस्स, सयंभूस्स, वारिस्स, महुस्स

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आम् (षष्ठी बहुवचन) - हरीण, गामणीण, साहूण, सयंभूण, वारीण, महूण, कहाण, मईण, लच्छीण, धेणूण, बहूण

ङि (सप्तमी एकवचन) - हरिम्मि, गामणीम्मि, साहुम्मि, सयंभूम्मि, वारिम्मि, महुम्मि

सुप् (सप्तमी बहुवचन) - हरीसु, गामणीसु, साहूसु, सयंभूसु, वारीसु, महूसु, कहासु, मईसु, लच्छीसु, धेणूसु, बहूसु

107. न ङिङस्योरेदातौ 6/61

न ङिङस्योरेदातौ न { (ङि) + (ङस्योः) + (एत्) + (आतौ) }

न = नहीं { (ङि) - (ङसि) 7/2 } { (एत्) - (आत्) 1/2 }

ङि तथा ङसि परे होने पर एत् और आत् नहीं (होते)।

इकारान्त और उकारान्त शब्दों से परे ङि (सप्तमी एकवचन का प्रत्यय) होने पर एत्→ए और ङसि (पंचमी एकवचन का प्रत्यय) परे होने पर आत्→आ नहीं होते। (यह सूत्र 6/60 से प्राप्त होनेवाले प्रत्ययों का निषेध सूत्र है)

108. ए भ्यसि 6/62

ए (ए) 1/1 भ्यसि (भ्यस्) 7/1

भ्यस् परे होने पर 'ए' (नहीं होता)।

इकारान्त और उकारान्त शब्दों से परे भ्यस् (पंचमी बहुवचन का प्रत्यय) परे होने पर अकारान्त शब्दों की तरह 'एकार' (नहीं होता) (यह सूत्र 6/60 से प्राप्त होनेवाले प्रत्ययों का निषेध सूत्र है)

109. द्विवचनस्य बहुवचनम् 6/63

द्विवचनस्य (द्विवचन) 6/1 बहुवचनम् (बहुवचन) 1/1

द्विवचन के स्थान पर बहुवचन (होता है)।

प्राकृत में द्विवचन नहीं होता। द्विवचन के स्थान पर बहुवचन होता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

110. चतुर्थ्याः षष्ठी 6/64

चतुर्थ्याः (चतुर्थी) 6/1 षष्ठी (षष्ठी) 1/1

चतुर्थी के स्थान पर षष्ठी (होती है)।

प्राकृत में चतुर्थी व षष्ठी के लिए एक ही जैसे प्रत्यय प्रयुक्त किये जाते हैं।

111. शेषः संस्कृतात् 9/18

शेषः (शेष) 1/1 संस्कृतात् (संस्कृत) 5/1

शेष (रूप) संस्कृत से (समझना चाहिए)।

प्राकृत में बचे हुए शेष शब्दरूपों को संस्कृत के समान समझना चाहिए।

(कहा + सि) = कहा (प्रथमा एकवचन)

सभी संज्ञा शब्दों का संबोधन बहुवचन।

शौरसेनी सूत्र

112. अनादावयुजोस्तथयोर्दधौ 12/3

अनादावयुजोस्तथयोर्दधौ {(अनादौ) + (अयुजोः) + (तथयोः) + (दधौ)}

अनादौ (अनादि) 7/1 अयुजोः (अयुज्) 7/2 { (त) - (थ) 6/2} { (द) - (ध) 1/2}

अनादि और असंयुक्त 'त' और 'थ' के स्थान पर 'द' और 'ध' (होते हैं)।

अनादि (आदि में न रहनेवाले) और असंयुक्त 'त' और 'थ' के स्थान पर क्रमशः 'द' और 'ध' होते हैं।

भविष्यति → भविस्सदि

तथा → तधा

113. णिर्जश्शसोर्वा क्लीबे स्वरदीर्घश्च 12/11

णिर्जश्शसोर्वा क्लीबे स्वरदीर्घश्च { (णिः) + (जस्) + (शसोः) + (वा) }

क्लीबे { (स्वर) - (दीर्घः) + (च) }

णिः (णि) 1/1 { (जस्) - (शस्) 6/2} वा = विकल्प से

क्लीबे (क्लीब) 7/1 { (स्वर) - (दीर्घ) 1/1} च = और

नपुंसकलिंग में जस् और शस् के स्थान पर विकल्प से **'णि'** (होता है) और पूर्व स्वर दीर्घ (होता है)।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग में जस् (प्रथमा बहुवचन का प्रत्यय) और शस् (द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय) के स्थान पर विकल्प से **'णि'** होता है और पूर्व स्वर दीर्घ होता है।

(कमल + जस्)	= **कमलाणि**	**(प्रथमा बहुवचन)**
(कमल + शस्)	= **कमलाणि**	**(द्वितीया बहुवचन)**
(वारि + जस्)	= **वारीणि**	**(प्रथमा बहुवचन)**
(वारि + शस्)	= **वारीणि**	**(द्वितीया बहुवचन)**
(महु + जस्)	= **महूणि**	**(प्रथमा बहुवचन)**
(महु + शस्)	= **महूणि**	**(द्वितीया बहुवचन)**

114. शेषं महाराष्ट्रीवत् 12/32

शेषं महाराष्ट्रीवत् { (शेषम्) + (महाराष्ट्रीवत्) }

शेषं (शेष) 2/1 महाराष्ट्रीवत् = महाराष्ट्री की तरह

शेष रूपों को महाराष्ट्री की तरह (समझना चाहिए)

शेष रूपों को महाराष्ट्री की तरह समझना चाहिए।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ - 2
संज्ञा - शब्दरूप

प्रस्तुत अध्याय मे संज्ञा शब्दों की रूपावली दी जा रही है। इसमें निम्नलिखित शब्दों की रूपावली दी जा रही है -

पुल्लिंग शब्द - देव, हरि, गामणी, साहु, सयंभू,

नपुंसकलिंग शब्द - कमल, वारि, महु,

स्त्रीलिंग शब्द - कहा, मइ, लच्छी, धेणु, बहू

इन शब्दों के अतिरिक्त कुछ और शब्दों की रूपावली भी दी जा रही है जो विशेष प्रकार से चलती है -

संज्ञावाचक पुल्लिंग शब्द - पिअर, पिउ (पिता)

पुल्लिंग शब्द - राय (राजा)

पुल्लिंग शब्द - अप्प, अप्पाण (आत्मा)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

देव (अकारान्त पुल्लिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	देवो (5/1)	देवा (5/2, 5/11)
द्वितीया	देवं (5/3)	देवा (5/2, 5/11) देवे (5/12)
तृतीया	देवेण (5/4, 5/12)	देवेहिं (5/5, 5/12)
चतुर्थी व षष्ठी	देवस्स (5/8)	देवाण (5/4, 5/11)
पंचमी	देवा, देवादो, देवादु, देवाहि (5/6, 5/11) ,देव (5/13)	देवेहिन्तो, देवेसुन्तो, देवाहिन्तो, देवासुन्तो (5/7, 5/12)
सप्तमी	देवे, देवम्मि (5/9) देव(5/13)	देवेसु (5/10, 5/12)
संबोधन	हे देव (5/27)	हे देवा (9/18)

हरि (इकारान्त पुल्लिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरी (5/18)	हरिणो (5/16) हरीओ (5/16)
द्वितीया	हरिं (6/60, 5/3)	हरिणो (5/14)
तृतीया	हरिणा (5/17)	हरीहिं (5/18, 6/60, 5/5)
चतुर्थी व षष्ठी	हरिणो (5/15) हरिस्स (6/60, 5/8)	हरीण (6/60, 5/4, 5/11)
पंचमी	हरीदो, हरीदु, हरीहि (6/60,5/6, 5/11, 6/61)	हरीहिन्तो, हरीसुन्तो, (6/60, 5/7, 5/12)
सप्तमी	हरिम्मि (6/60, 5/9, 6/61)	हरीसु (6/60, 5/18, 5/10)
संबोधन	हे हरि (5/27)	हे हरीओ, हे हरिणो (9/18)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गामणी (ईकारान्त पुल्लिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	गामणी (5/18)	गामणीणो (5/16) गामणीओ (5/16)
द्वितीया	गामणीं (6/60, 5/3)	गामणीणो (5/14)
तृतीया	गामणीणा (5/17)	गामणीहिं (6/60, 5/18, 5/5)
चतुर्थी व	गामणिणो (5/15)	गामणीण (6/60, 5/4)
षष्ठी	गामणिस्स (6/60, 5/8)	
पंचमी	गामणीदो, गामणीदु, गामणीहि (6/60, 5/6, 6/61)	गामणीहिन्तो, गामणीसुन्तो, (6/60, 5/7)
सप्तमी	गामणीम्मि (6/60, 5/9, 6/61)	गामणीसु (6/60, 5/18, 5/10)
संबोधन	हे गामणी (5/27)	हे गामणीणो, हे गामणीओ (9/18)

साहु (उकारान्त पुल्लिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	साहू (5/18)	साहुणो (5/16) साहूओ (5/16)
द्वितीया	साहुं (6/60, 5/3)	साहुणो (5/14)
तृतीया	साहुणा (5/17)	साहूहिं (6/60, 5/18, 5/5)
चतुर्थी व	साहुणो (5/15)	साहूण (6/60, 5/4, 5/11)
षष्ठी	साहुस्स (6/60, 5/8)	
पंचमी	साहूदो, साहूदु, साहूहि (6/60,5/6, 5/11, 6/61)	साहूहिन्तो, साहूसुन्तो, (6/60, 5/7, 5/12)
सप्तमी	साहुम्मि (6/60, 5/9, 6/61)	साहूसु (6/60, 5/18, 5/10)
संबोधन	हे साहु (5/27)	हे साहुणो, हे साहूओ (9/18)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सयंभू (ऊकारान्त पुल्लिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सयंभू (5/18)	सयंभूणो (5/16) सयंभूओ (5/16)
द्वितीया	सयंभूं (6/60, 5/3)	सयंभूणो (5/14)
तृतीया	सयंभूणा (5/17)	सयंभूहिं (6/60, 5/18, 5/5)
चतुर्थी व	सयंभूणो (5/15)	सयंभूण (6/60, 5/4)
षष्ठी	सयंभूस्स (6/60, 5/8)	
पंचमी	सयंभूदो, सयंभूदु, सयंभूहि (6/60, 5/6, 6/61)	सयंभूहिन्तो, सयंभूसुन्तो, (6/60, 5/7)
सप्तमी	सयंभूम्मि (6/60, 5/9, 6/61)	सयंभूसु (6/60, 5/18, 5/10)
संबोधन	हे सयंभू (5/27)	हे सयंभूणो, हे सयंभूओ (9/18)

कमल (अकारान्त नपुंसकलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कमलं (5/30)	कमलाइं (5/26), कमलाणि (12/11)
द्वितीया	कमलं (5/3)	कमलाइं (5/26), कमलाणि (12/11)
तृतीया	कमलेण (5/4, 5/12)*	कमलेहिं (5/5, 5/12)
चतुर्थी व षष्ठी	कमलस्स (5/8)	कमलाण (5/4, 5/11)
पंचमी	कमला, कमलादो, कमलादु, कमलाहि (5/6, 5/11) कमल (5/13)	कमलेहिन्तो, कमलेसुन्तो, कमलाहिन्तो, कमलासुन्तो (5/7, 5/12)
सप्तमी	कमले, कमलम्मि (5/9) कमल (5/13)	कमलेसु (5/10, 5/12)
संबोधन	हे कमल (5/27)	हे कमलाइं (9/18)

* **नोट** - कातन्त्ररूपमाला के सूत्र संख्या 240 के अनुसार तृतीया से सप्तमी तक के नपुंसकलिंग शब्दों की रूपावली पुल्लिंग शब्दों के समान चलती है, इसीलिए सूत्रकार ने तृतीया से सप्तमी तक के प्रत्ययों का उल्लेख नहीं किया।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वारि (इकारान्त नपुंसकलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारिं (5/30)	वारीइं (5/26), वारीणि (12/11)
द्वितीया	वारिं (6/60, 5/3)	वारीइं (5/26), वारीणि (12/11)
तृतीया	वारिणा (5/17)*	वारीहिं (6/60, 5/18, 5/5)
चतुर्थी व	वारिणो (5/15)	वारीण (6/60, 5/4, 5/11)
षष्ठी	वारिस्स (6/60, 5/8)	
पंचमी	वारीदो, वारीदु, वारीहि (6/60, 5/6, 5/11, 6/61)	वारीहिन्तो, वारीसुन्तो, (6/60, 5/7, 5/12)
सप्तमी	वारिम्मि (6/60, 5/9, 6/61)	वारीसु (6/60, 5/18, 5/10)
संबोधन	हे वारि (5/27)	हे वारीइं (9/18)

महु (उकारान्त नपुंसकलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	महुं (5/30)	महूइं (5/26), महूणि (12/11)
द्वितीया	महुं (6/60, 5/3)	महूइं (5/26), महूणि (12/11)
तृतीया	महुणा (5/17)*	महूहिं (6/60, 5/18, 5/5)
चतुर्थी व	महुणो (5/15)	महूण (6/60, 5/4, 5/11)
षष्ठी	महुस्स (6/60, 5/8)	
पंचमी	महूदो, महूदु, महूहि (6/60,5/6, 5/11, 6/61)	महूहिन्तो, महूसुन्तो (6/60, 5/7, 5/12)
सप्तमी	महुम्मि (6/60, 5/9, 6/61)	महूसु (6/60, 5/18, 5/10)
संबोधन	हे महु (5/27)	हे महूइं (9/18)

***नोट** - कातन्त्ररूपमाला के सूत्र संख्या 240 के अनुसार तृतीया से सप्तमी तक के नपुंसकलिंग शब्दों की रूपावली पुल्लिंग शब्दों के समान चलती है, इसीलिए सूत्रकार ने तृतीया से सप्तमी तक के प्रत्ययों का उल्लेख नहीं किया।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कहा (आकारान्त स्त्रीलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कहा (9/18)	कहाउ, कहाओ (5/20) कहा (6/60, 5/2)
द्वितीया	कहं (5/21, 6/60, 5/3)	कहाउ, कहाओ (5/19)
तृतीया	कहाइ, कहाए (5/22, 5/23)	कहाहिं (6/60, 5/5)
चतुर्थी व षष्ठी	कहाइ, कहाए (5/22, 5/23)	कहाण (6/60, 5/4)
पंचमी	कहादो, कहादु, कहाहि (6/60,5/6, 6/61)	कहाहिन्तो, कहासुन्तो (6/60, 5/7)
सप्तमी	कहाइ, कहाए (5/22, 5/23)	कहासु (6/60, 5/10)
संबोधन	हे कहे (5/28)	हे कहाउ,हे कहाओ,हे कहा(9/18)

मइ (इकारान्त स्त्रीलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	मई (5/18)*	मइउ, मइओ (5/20) मई (6/60, 5/2, 5/11)
द्वितीया	मइं (5/21, 6/60, 5/3)	मइउ, मइओ (5/19)
तृतीया	मइअ, मइआ, मइइ, मइए (5/22)	मईहिं (6/60, 5/5, 5/18)
चतुर्थी व षष्ठी	मइअ, मइआ, मइइ, मइए (5/22)	मईण (6/60, 5/4, 5/11)
पंचमी	मईदो, मईदु, मईहि (6/60, 5/6, 5/11, 6/61)	मईहिन्तो, मईसुन्तो (6/60, 5/7, 5/12)
सप्तमी	मइअ, मइआ, मइइ, मइए (5/22)	मईसु (6/60, 5/10, 5/18)
संबोधन	हे मइ (5/27)	हे मइउ, हे मइओ, हे मई (9/18)

*सुबोधिनी टीका के आधार पर।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

लच्छी (ईकारान्त स्त्रीलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	लच्छी (5/18)*	लच्छीउ, लच्छीओ (5/20) लच्छी (6/60, 5/2)
द्वितीया	लच्छिं (5/21, 6/60, 5/3)	लच्छीउ, लच्छीओ (5/19)
तृतीया	लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ लच्छीए (5/22)	लच्छीहिं (6/60, 5/5)
चतुर्थी व षष्ठी	लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए (5/22)	लच्छीण (6/60, 5/4)
पंचमी	लच्छीदो, लच्छीदु, लच्छीहि (6/60, 5/6, 6/61)	लच्छीहिन्तो, लच्छीसुन्तो (6/60, 5/7)
सप्तमी	लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए (5/22)	लच्छीसु (6/60, 5/10)
संबोधन	हे लच्छि (5/29)	हे लच्छीउ,हे लच्छीओ, हे लच्छी (9/18)

धेणु (उकारान्त स्त्रीलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेणू (5/18)*	धेणुउ, धेणुओ (5/20) धेणू (6/60, 5/2, 5/11)
द्वितीया	धेणुं (5/21, 6/60, 5/3)	धेणुउ, धेणुओ (5/19)
तृतीया	धेणुअ, धेणुआ, धेणुइ, धेणुए (5/22)	धेणूहिं (6/60, 5/5, 5/18)
चतुर्थी व षष्ठी	धेणुअ, धेणुआ, धेणुइ, धेणुए (5/22)	धेणूण (6/60, 5/4, 5/11)
पंचमी	धेणूदो, धेणूदु, धेणूहि (6/60, 5/6, 5/11, 6/61)	धेणूहिन्तो, धेणूसुन्तो (6/60, 5/7, 5/12)
सप्तमी	धेणुअ, धेणुआ, धेणुइ, धेणुए (5/22)	धेणूसु (6/60, 5/10, 5/18)
संबोधन	हे धेणु (5/27)	हे धेणुउ, हे धेणुओ, हे धेणू (9/18)

* सुबोधिनी टीका के आधार पर।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बहू (ऊकारान्त स्त्रीलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	बहू (5/18)*	बहूउ, बहूओ (5/20) बहू (6/60, 5/2)
द्वितीया	बहुं (5/21, 6/60, 5/3)	बहूउ, बहूओ (5/19)
तृतीया	बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए (5/22)	बहूहिं (6/60, 5/5)
चतुर्थी व षष्ठी	बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए, (5/22)	बहूण (6/60, 5/4)
पंचमी	बहूदो, बहूदु, बहूहि (6/60, 5/6, 6/61)	बहूहिन्तो, बहूसुन्तो (6/60, 5/7)
सप्तमी	बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए (5/22)	बहूसु (6/60, 5/10)
संबोधन	हे बहु (5/29)	हे बहूउ, हे बहूओ, हे बहू (9/18)

* सुबोधिनी टीका के आधार पर।

पिअर = पिता (अकारान्त की तरह रूप)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिआ (5/35), पिअरो (5/34, 5/1)	पिअरा (5/34, 5/2,5/11)
द्वितीया	पिअरं (5/34, 5/3)	पिअरा (5/34, 5/2, 5/11) पिअरे (5/34, 5/12)
तृतीया	पिअरेण (5/34, 5/4, 5/12)	पिअरेहिं (5/34, 5/5, 5/12)
चतुर्थी व षष्ठी	पिअरस्स (5/34, 5/8)	पिअराण (5/34, 5/4, 5/11)
पंचमी	पिअरा, पिअरादो, पिअरादु, पिअराहि (5/34, 5/6, 5/11) पिअर (5/34, 5/13)	पिअरेहिन्तो, पिअरेसुन्तो, पिअराहिन्तो, पिअरासुन्तो (5/34, 5/7, 5/12)
सप्तमी	पिअरे, पिअरम्मि (5/34,5/9) पिअर (5/34, 5/13)	पिअरेसु (5/34, 5/10, 5/12)
संबोधन	हे पिअर (5/27)	हे पिअरा (9/18)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पिउ = पिता (उकारान्त की तरह रूप)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा		पिउणो (5/33, 5/16)
द्वितीया		पिउणो (5/33, 5/14)
तृतीया	पिउणा (5/33, 5/17)	
चतुर्थी व	पिउणो (5/33, 5/15)	
षष्ठी		
पंचमी		
सप्तमी		पिऊसु (5/33, 5/18, 5/10)
संबोधन		

राअ (राजा)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	राआ (5/36)	राआणो (5/38, 5/44)
द्वितीया	राअं (6/60, 5/3)	राआणो (5/38, 5/44) राए (5/39)
तृतीया	राइणा (5/41, 5/43) रण्णा (5/42, 5/41)	राएहिं (6/60, 5/5, 5/12)
चतुर्थी व	राइणो (5/38, 5/43)	राआणं (5/40, 5/44)
षष्ठी	रण्णो (5/42)	
पंचमी	राआ, राआदो, राआदु, राआहि (6/60, 5/6, 5/11)	राएहिन्तो, राएसुन्तो, राआहिन्तो, राआसुन्तो (6/60, 5/7, 5/12)
सप्तमी	राए, राअम्मि (6/60, 5/9)	राएसु (6/60,5/10, 5/12)
संबोधन	हे राअं (5/37)	हे राआणो (9/18)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अप्प (राअ की तरह रूप)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अप्पा (5/46, 5/36)	अप्पाणो (5/46, 5/38, 5/44)
द्वितीया	अप्पं (5/46, 6/60, 5/3)	अप्पाणो (5/46, 5/38, 5/44) अप्पे (5/46, 5/39)
तृतीया	अप्पणा (5/46, 5/41)	अप्पेहिं (6/60, 5/5, 5/12)
चतुर्थी व षष्ठी	अप्पणो (5/46, 5/38)	अप्पाणं (5/46, 5/40, 5/44)
पंचमी	अप्पा, अप्पादो, अप्पादु, अप्पाहि (6/60, 5/6, 5/11)	अप्पेहिन्तो, अप्पेसुन्तो, अप्पाहिन्तो, अप्पासुन्तो (6/60, 5/7, 5/12)
सप्तमी	अप्पे, अप्पम्मि (6/60,5/9)	अप्पेसु (6/60,5/10, 5/12)
संबोधन	हे अप्पं (5/46, 5/37)	हे अप्पाणो (9/18)

अप्पाण (अकारान्त पुल्लिंग की तरह रूप)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अप्पाणो (5/45, 5/1)	अप्पाणा (5/45, 5/2, 5/11)
द्वितीया	अप्पाणं (5/45, 5/3)	अप्पाणा (5/45, 5/2, 5/11) अप्पाणे (5/45, 5/12)
तृतीया	अप्पाणेण (5/45,5/4, 5/12)	अप्पाणेहिं (5/45, 5/5, 5/12)
चतुर्थी व षष्ठी	अप्पाणस्स (5/45, 5/8)	अप्पाणाण (5/45, 5/4, 5/11)
पंचमी	अप्पाणा, अप्पाणादो, अप्पाणादु, अप्पाणाहि (5/45, 5/6, 5/11) अप्पाण (5/45, 5/13)	अप्पाणेहिन्तो, अप्पाणेसुन्तो, अप्पाणाहिन्तो, अप्पाणासुन्तो (5/45, 5/7, 5/12)
सप्तमी	अप्पाणे,अप्पाणम्मि (5/45,5/9) अप्पाण (5/45, 5/13)	अप्पाणेसु (5/45,5/10, 5/12)
संबोधन	हे अप्पाण (5/45, 5/27)	हे अप्पाणा (9/18)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ - 3

सर्वनाम - शब्दरूप

प्रस्तुत अध्याय मे सर्वनाम शब्दों की रूपावली दी जा रही है। इसमें निम्नलिखित शब्दों की रूपावली दी जा रही है -

पुल्लिंग शब्द - सव्व, त, ज, क, एत, इम, अमु

नपुंसकलिंग शब्द - सव्व, त, ज, क, एत, इम, अमु

स्त्रीलिंग शब्द - सव्वा, ता, ती, जा, जी, का, की, एता, इमा, अमु

तीनों लिंगों में - अम्ह, तुम्ह

पुल्लिंग - सव्व (सब)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वो (5/1)	सव्वे (6/1)
द्वितीया	सव्वं (5/3)	सव्वे (5/12)
		सव्वा (5/2, 5/11)
तृतीया	सव्वेण (5/4, 5/12)	सव्वेहिं (5/5, 5/12)
चतुर्थी व षष्ठी	सव्वस्स (5/8)	सव्वाण (5/4, 5/11)
पंचमी	सव्वा, सव्वादो, सव्वादु, सव्वाहि (5/6, 5/11)	सव्वेहिन्तो, सव्वेसुन्तो, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो (5/7, 5/12)
सप्तमी	सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वत्थ (6/2)	सव्वेसु (5/10, 5/12)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग - त (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सो (6/22, 5/1)	ते (6/1)
द्वितीया	तं (5/3)	ते (5/12)
		ता (5/2, 5/11)
तृतीया	तिणा (6/3)	तेहिं (5/5, 5/12)
	तेण (5/4, 5/12)	
चतुर्थी व	तास (6/5), से (6/11)	तेसिं (6/4), सिं (6/12)
षष्ठी	तस्स (5/8)	ताण (5/4, 5/11)
पंचमी	तत्तो, तदो (6/9)	ताहिन्तो, तासुन्तो, तेहिन्तो,
	तो (6/10)	तेसुन्तो (5/7, 5/12)
सप्तमी	तस्सिं, तम्मि, तत्थ (6/2)	तेसु (5/10, 5/12)
	तहिं (6/7)	
	ताहे, तइआ (6/8)	

पुल्लिंग - ज (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जो (5/1)	जे (6/1)
द्वितीया	जं (5/3)	जे (5/12)
		जा (5/2, 5/11)
तृतीया	जिणा (6/3)	जेहिं (5/5, 5/12)
	जेण (5/4, 5/12)	
चतुर्थी व	जास (6/5)	जेसिं (6/4)
षष्ठी	जस्स (5/8)	जाण (5/4, 5/11)
पंचमी	जत्तो, जदो (6/9)	जाहिन्तो, जासुन्तो, जेहिन्तो,
		जेसुन्तो (5/7, 5/12)
सप्तमी	जस्सिं, जम्मि, जत्थ (6/2)	जेसु (5/10, 5/12)
	जहिं (6/7)	
	जाहे, जइआ (6/8)	

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग - क (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	को (5/1)	के (6/1)
द्वितीया	कं (5/3)	के (5/12)
		का (5/2, 5/11)
तृतीया	किणा (6/3)	केहिं (5/5, 5/12)
	केण (5/4, 5/12)	
चतुर्थी व	कास (6/5)	केसिं (6/4)
षष्ठी	कस्स (5/8)	काण (5/4, 5/11)
पंचमी	कत्तो, कदो (6/9)	काहिन्तो, कासुन्तो, केहिन्तो,
		केसुन्तो (5/7, 5/12)
सप्तमी	कस्सिं, कम्मि, कत्थ (6/2)	केसु (5/10, 5/12)
	कहिं (6/7)	
	काहे, कइआ (6/8)	

पुल्लिंग - एत (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एसो (6/19, 6/22)	एते (6/1)
	एस (6/19)	
द्वितीया	एतं (5/3)	एते (5/12)
		एता (5/2, 5/11)
तृतीया	एतिणा (6/3)	एतेहिं (5/5, 5/12)
	एतेण (5/4, 5/12)	
चतुर्थी व	एतस्स (5/8)	एतेसिं (6/4)
षष्ठी		एताण (5/4, 5/11)
पंचमी	एत्तो (6/20, 6/21)	एताहिन्तो, एतासुन्तो, एतेहिन्तो,
	एता, एतादो, एतादु, एताहि	एतेसुन्तो (5/7, 5/12)
	(5/6, 5/11)	
सप्तमी	एतस्सिं, एतम्मि,	एतेसु (5/10, 5/12)
	एत्थ (6/2,6/21)	

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग - इम (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमो (5/1)	इमे (6/1)
द्वितीया	इमं (5/3)	इमे (5/12)
		इमा (5/2, 5/11)
तृतीया	इमिणा (6/3)	इमेहिं (5/5, 5/12)
	इमेण (5/4, 5/12)	
चतुर्थी व	अस्स (6/15, 5/8)	इमेसिं (6/4)
षष्ठी	इमस्स (5/8)	इमाण (5/4, 5/11)
पंचमी	इमा, इमादो, इमादु, इमाहि	इमाहिन्तो, इमासुन्तो, इमेहिन्तो,
	(5/6, 5/11)	इमेसुन्तो (5/7, 5/12)
सप्तमी	अस्सिं (6/2, 6/15)	इमेसु (5/10, 5/12)
	इमस्सिं, इमम्मि (6/2, 6/17)	
	इह (6/16)	

पुल्लिंग - अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अह (6/24)	अमुणो (5/16), अमूओ (5/16)
	अमू (5/18)	
द्वितीया	अमुं (6/60, 5/3)	अमुणो (5/14)
तृतीया	अमुणा (5/17)	अमूहिं (6/60, 5/18, 5/5)
चतुर्थी व	अमुस्स (6/60, 5/8)	अमूणं (6/60, 5/4, 5/11)
षष्ठी	अमुणो (5/15)	
पंचमी	अमूदो, अमूदु, अमूहि	अमूहिन्तो, अमूसुन्तो
	(6/60, 5/6, 5/11, 6/61)	(6/60, 5/7, 5/12)
सप्तमी	अमुस्सिं, अमुम्मि, अमुत्थ (6/2)	अमूसु (6/60, 5/18, 5/10)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग - सव्व (सब)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वं (5/30)	सव्वाइं (5/26), सव्वाणि (12/11)
द्वितीया	सव्वं (5/3)	सव्वाइं (5/26), सव्वाणि (12/11)
तृतीया	सव्वेण (5/4, 5/12)	सव्वेहिं (5/5, 5/12)
चतुर्थी व षष्ठी	सव्वस्स (5/8)	सव्वाण (5/4, 5/11)
पंचमी	सव्वा, सव्वादो, सव्वादु, सव्वाहि (5/6, 5/11)	सव्वेहिन्तो, सव्वेसुन्तो, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो (5/7, 5/12)
सप्तमी	सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वत्थ (6/2)	सव्वेसु (5/10, 5/12)

नपुंसकलिंग - त (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तं (5/30)	ताइं (5/26), ताणि (12/11)
द्वितीया	तं (5/3)	ताइं (5/26), ताणि (12/11)
तृतीया	तिणा (6/3) तेण (5/4, 5/12)	तेहिं (5/5, 5/12)
चतुर्थी व षष्ठी	तास (6/5), से (6/11) तस्स (5/8)	तेसिं (6/4), सिं (6/12) ताण (5/4, 5/11)
पंचमी	तत्तो, तदो (6/9) तो (6/10)	ताहिन्तो, तासुन्तो, तेहिन्तो, तेसुन्तो (5/7, 5/12)
सप्तमी	तस्सिं, तम्मि, तत्थ (6/2) तहिं (6/7) ताहे, तइआ (6/8)	तेसु (5/10, 5/12)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग - ज (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जं (5/30)	जाइं (5/26), जाणि (12/11)
द्वितीया	जं (5/3)	जाइं (5/26), जाणि (12/11)
तृतीया	जिणा (6/3) जेण (5/4, 5/12)	जेहिं (5/5, 5/12)
चतुर्थी व	जास (6/5)	जेसिं (6/4)
षष्ठी	जस्स (5/8)	जाण (5/4, 5/11)
पंचमी	जत्तो, जदो (6/9)	जाहिन्तो, जासुन्तो, जेहिन्तो, जेसुन्तो (5/7, 5/12)
सप्तमी	जस्सिं, जम्मि, जत्थ (6/2) जहिं (6/7) जाहे, जइआ (6/8)	जेसु (5/10, 5/12)

नपुंसकलिंग - क (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कं (5/30)	काइं (5/26), काणि (12/11)
द्वितीया	कं (5/3)	काइं (5/26), काणि (12/11)
तृतीया	किणा (6/3) केण (5/4, 5/12)	केहिं (5/5, 5/12)
चतुर्थी व	कास (6/5)	केसिं (6/4)
षष्ठी	कस्स (5/8)	काण (5/4, 5/11)
पंचमी	कत्तो, कदो (6/9)	काहिन्तो, कासुन्तो, केहिन्तो, केसुन्तो (5/7, 5/12)
सप्तमी	कस्सिं, कम्मि, कत्थ (6/2) कहिं (6/7) काहे, कइआ (6/8)	केसु (5/10, 5/12)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग - एत (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतं (5/30)	एताइं (5/26), एताणि (12/11)
द्वितीया	एतं (5/3)	एताइं (5/26), एताणि (12/11)
तृतीया	एतिणा (6/3) एतेण (5/4, 5/12)	एतेहिं (5/5, 5/12)
चतुर्थी व षष्ठी	एतस्स (5/8)	एतेसिं (6/4) एताण (5/4, 5/11)
पंचमी	एत्तो (6/20, 6/21) एता, एतादो, एतादु, एताहि (5/6, 5/11)	एताहिन्तो, एतासुन्तो, एतेहिन्तो, एतेसुन्तो (5/7, 5/12)
सप्तमी	एतस्सिं, एतम्मि, एत्थ (6/2,6/21)	एतेसु (5/10, 5/12)

नपुंसकलिंग - इम (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदं, इणं, इणमो (6/18)	इमाइं (5/26), इमाणि (12/11)
द्वितीया	इदं, इणं, इणमो (6/18)	इमाइं (5/26), इमाणि (12/11)
तृतीया	इमिणा (6/3) इमेण (5/4, 5/12)	इमेहिं (5/5, 5/12)
चतुर्थी व षष्ठी	अस्स (6/15, 5/8) इमस्स (5/8)	इमेसिं (6/4) इमाण (5/4, 5/11)
पंचमी	इमा, इमादो, इमादु, इमाहि (5/6, 5/11)	इमाहिन्तो, इमासुन्तो, इमेहिन्तो, इमेसुन्तो (5/7, 5/12)
सप्तमी	अस्सिं (6/2, 6/15) इमस्सिं, इमम्मि (6/2, 6/17) इह (6/16)	इमेसु (5/10, 5/12)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग - अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमुं (6/60, 5/30)	अमूइं (6/60, 5/26)
	अह (6/24)	अमूणि (6/60, 12/11)
द्वितीया	अमुं (6/60, 5/3)	अमूइं (6/60, 5/26),
		अमूणि (6/60, 12/11)
तृतीया	अमुणा (5/17)	अमूहिं (6/60, 5/18, 5/5)
चतुर्थी व	अमुस्स (6/60, 5/8)	अमूण (6/60, 5/4, 5/11)
षष्ठी	अमुणो (5/15)	
पंचमी	अमूदो, अमूदु, अमूहि	अमूहिन्तो, अमूसुन्तो
	(6/60, 5/6, 5/11, 6/61)	(6/60, 5/7, 5/12)
सप्तमी	अमुस्सिं, अमुम्मि, अमुत्थ (6/2)	अमूसु (6/60, 5/18, 5/10)

स्त्रीलिंग - सव्वा (सब)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वा (9/18)	सव्वाउ, सव्वाओ (5/20)
		सव्वा (6/60, 5/2)
द्वितीया	सव्वं (5/21, 6/60, 5/3)	सव्वाउ, सव्वाओ (5/19)
तृतीया	सव्वाइ, सव्वाए (5/22, 5/23)	सव्वाहिं (6/60, 5/5)
चतुर्थी व	सव्वाइ, सव्वाए (5/22, 5/23)	सव्वाण (6/60, 5/4)
षष्ठी		
पंचमी	सव्वादो, सव्वादु, सव्वाहि	सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो
	(6/60,5/6, 6/61)	(6/60, 5/7)
सप्तमी	सव्वाइ, सव्वाए (5/22, 5/23)	सव्वासु (6/60, 5/10)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - ता (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा (6/22, 9/18)	ताउ, ताओ (5/20) ता (6/60, 5/2)
द्वितीया	तं (5/21, 6/60, 5/3)	ताउ, ताओ (5/19)
तृतीया	ताइ, ताए (5/22, 5/23)	ताहिं (6/60, 5/5)
चतुर्थी व षष्ठी	ताइ, ताए (5/22, 5/23)	ताण (6/60, 5/4)
पंचमी	तादो, तादु, ताहि (6/60,5/6, 6/61)	ताहिन्तो, तासुन्तो (6/60, 5/7)
सप्तमी	ताइ, ताए (5/22, 5/23)	तासु (6/60, 5/10)

स्त्रीलिंग - ती (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	ती (5/18)*	तीउ, तीओ (5/20) ती (6/60, 5/2)
द्वितीया	तिं (5/21, 6/60, 5/3)	तीउ, तीओ (5/19)
तृतीया	तीअ, तीआ, तीइ, तीए (5/22)	तीहिं (6/60, 5/5)
चतुर्थी व षष्ठी	तीअ, तीआ, तीइ, तीए (5/22)	तीण (6/60, 5/4)
पंचमी	तीदो, तीदु, तीहिं (6/60, 5/6, 6/61)	तीहिन्तो, तीसुन्तो (6/60, 5/7)
सप्तमी	तीअ, तीआ, तीइ, तीए (5/22)	तीसु (6/60, 5/10)

* सुबोधिनी टीका के आधार पर।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - जा (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जा (9/18)	जाउ, जाओ (5/20) जा (6/60, 5/2)
द्वितीया	जं (5/21, 6/60, 5/3)	जाउ, जाओ (5/19)
तृतीया	जाइ, जाए (5/22, 5/23)	जाहिं (6/60, 5/5)
चतुर्थी व षष्ठी	जाइ, जाए (5/22, 5/23)	जाण (6/60, 5/4)
पंचमी	जादो, जादु, जाहि (6/60,5/6, 6/61)	जाहिन्तो, जासुन्तो (6/60, 5/7)
सप्तमी	जाइ, जाए (5/22, 5/23)	जासु (6/60, 5/10)

स्त्रीलिंग - जी (ज्रो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जी (5/18)*	जीउ, जीओ (5/20) जी (6/60, 5/2)
द्वितीया	जिं (5/21, 6/60, 5/3)	जीउ, जीओ (5/19)
तृतीया	जीअ, जीआ, जीइ, जीए (5/22)	जीहिं (6/60, 5/5)
चतुर्थी व षष्ठी	जीअ, जीआ, जीइ, जीए (5/22)	जीण (6/60, 5/4)
पंचमी	जीदो, जीदु, जीहि (6/60, 5/6, 6/61)	जीहिन्तो, जीसुन्तो (6/60, 5/7)
सप्तमी	जीअ, जीआ, जीइ, जीए (5/22)	जीसु (6/60, 5/10)

* सुबोधिनी टीका के आधार पर।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - का (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	का (9/18)	काउ, काओ (5/20) का (6/60, 5/2)
द्वितीया	कं (5/21, 6/60, 5/3)	काउ, काओ (5/19)
तृतीया	काइ, काए (5/22, 5/23)	काहिं (6/60, 5/5)
चतुर्थी व षष्ठी	काइ, काए (5/22, 5/23)	काण (6/60, 5/4)
पंचमी	कादो, कादु, काहि (6/60,5/6, 6/61)	काहिन्तो, कासुन्तो (6/60, 5/7)
सप्तमी	काइ, काए (5/22, 5/23)	कासु (6/60, 5/10)

स्त्रीलिंग - की (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	की (5/18)*	कीउ, कीओ (5/20) की (6/60, 5/2)
द्वितीया	किं (5/21, 6/60, 5/3)	कीउ, कीओ (5/19)
तृतीया	कीअ, कीआ, कीइ, कीए (5/22)	कीहिं (6/60, 5/5)
चतुर्थी व षष्ठी	कीअ, कीआ, कीइ, कीए (5/22)	कीण (6/60, 5/4)
पंचमी	कीदो, कीदु, कीहि (6/60, 5/6, 6/61)	कीहिन्तो, कीसुन्तो (6/60, 5/7)
सप्तमी	कीअ, कीआ, कीइ, कीए (5/22)	कीसु (6/60, 5/10)

* सुबोधिनी टीका के आधार पर।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - एता (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एसा (6/22, 9/18)	एताउ, एताओ (5/20) एता (6/60, 5/2)
द्वितीया	एतं (5/21, 6/60, 5/3)	एताउ, एताओ (5/19)
तृतीया	एताइ, एताए (5/22, 5/23)	एताहिं (6/60, 5/5)
चतुर्थी व षष्ठी	एताइ, एताए (5/22, 5/23)	एताण (6/60, 5/4)
पंचमी	एतादो, एतादु, एताहि (6/60,5/6, 6/61)	एताहिन्तो, एतासुन्तो (6/60, 5/7)
सप्तमी	एताइ, एताए (5/22, 5/23)	एतासु (6/60, 5/10)

स्त्रीलिंग - इमा (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमा (9/18)	इमाउ, इमाओ (5/20) इमा (6/60, 5/2)
द्वितीया	इमं (5/21, 6/60, 5/3)	इमाउ, इमाओ (5/19)
तृतीया	इमाइ, इमाए (5/22, 5/23)	इमाहिं (6/60, 5/5)
चतुर्थी व षष्ठी	इमाइ, इमाए (5/22, 5/23)	इमाण (6/60, 5/4)
पंचमी	इमादो, इमादु, इमाहि (6/60,5/6, 6/61)	इमाहिन्तो, इमासुन्तो (6/60, 5/7)
सप्तमी	इमाइ, इमाए (5/22, 5/23)	इमासु (6/60, 5/10)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमू (5/18)•	अमुउ, अमुओ (5/20)
	अह (6/24)	अमू (6/60, 5/2, 5/11)
द्वितीया	अमुं (5/21, 6/60, 5/3)	अमुउ, अमुओ (5/19)
तृतीया	अमुअ, अमुआ, अमुइ, अमुए (5/22),	अमूहिं (6/60, 5/5, 5/18)
चतुर्थी व षष्ठी	अमुअ, अमुआ, अमुइ, अमुए (5/22)	अमूण (6/60, 5/4, 5/11)
पंचमी	अमूदो, अमूदु, अमूहि (6/60, 5/6, 5/11, 6/61)	अमूहिन्तो, अमूसुन्तो (6/60, 5/7, 5/12)
सप्तमी	अमुअ, अमुआ, अमुइ, अमुए (5/22)	अमूसु (6/60, 5/10, 5/18)

• सुबोधिनी टीका के आधार पर।

तीनों लिंगों में - अम्ह (मैं)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	हं, अहं, अहअं (6/40) अहम्मि (6/41)	अम्हे (6/43)
द्वितीया	अहम्मि (6/41) मं, ममं (6/42)	अम्हे (6/43) णो (6/44)
तृतीया	मे, ममाइ (6/45) मइ, मए (6/46)	अम्हेहिं (6/47)
चतुर्थी व षष्ठी	मे, मम, मह, मज्झ (6/50)	मज्झ, णो, अम्ह, अम्हाणं, अम्हे (6/51)
पंचमी	मत्तो, मइत्तो, ममादो, ममादु, ममाहि (6/48)	अम्हाहिन्तो, अम्हासुन्तो (6/49)
सप्तमी	मइ, मए (6/46) ममम्मि, ममस्सिं (6/52)	अम्हेसु (6/53)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तीनों लिंगों में - तुम्ह (तुम)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तं, तुमं (6/26)	तुम्हे, तुज्झे (6/28)
द्वितीया	तुं, तं, तुमं (6/27)	वो, तुम्हे, तुज्झे (6/29)
तृतीया	तइ, तए, तुमए, तुमे (6/30) ते, दे (6/32), तुमाइ (6/33)	तुज्झेहिं, तुम्हेहिं, तुम्मेहिं (6/34)
चतुर्थी व	तुव, तुमो, तुह, तुज्झ, तुम्ह,	वो, भे, तुज्झाणं, तुम्हाणं (6/37)
षष्ठी	तुम्म (6/31), ते, दे (6/32)	
पंचमी	तत्तो, तइत्तो, तुमादो, तुमादु, तुमाहि (6/35)	तुम्हाहिन्तो, तुम्हासुन्तो (6/36)
सप्तमी	तइ, तए, तुमए, तुमे (6/30) तुमम्मि,तुमस्सिं (6/38)	तुज्झेसु, तुम्हेसु (6/39)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट - 1
प्राकृतप्रकाश की टीकाएँ

वररुचि ने तृतीय-चतुर्थ शताब्दी में प्राकृतप्रकाश की रचना की जो प्राकृत का सर्वाधिक लोकप्रिय व्याकरण ग्रन्थ है। संस्कृत में इसकी विभिन्न कालों में अनेक टीकाएँ लिखी गईं।

प्राकृतप्रकाश की सर्वाधिक प्राचीन व लोकप्रिय टीका पाँचवी शताब्दी के भामह द्वारा रचित 'मनोरमा' है। भामह के अनुसार इसमें बारह परिच्छेद हैं और 480 सूत्र हैं। प्रथम से नवें परिच्छेद तक सामान्य प्राकृत का विस्तार से विवरण प्रस्तुत किया गया है। दसवें परिच्छेद में पैशाची को अनुशासित किया गया है। ग्यारहवें परिच्छेद में मागधी का विवेचन किया गया है। अन्तिम बारहवें परिच्छेद में शौरसेनी का निरूपण किया गया है।

प्राकृतप्रकाश की दूसरी व्याख्या 'प्राकृतमञ्जरी' है। इसमें व्याख्या पद्यबद्ध है। इसके लेखक के सम्बन्ध में विवाद है। इसका समय भामह के बाद का ही मालूम चलता है। इसकी व्याख्या सरल है किन्तु शुरु के आठ अध्यायों तक ही मिलती है।

प्राकृतप्रकाश की तीसरी और प्रसिद्ध व्याख्या 'प्राकृतसंजीवनी' है। इसके रचयिता वसन्तराज ई. की चौदहवीं शताब्दी के माने गये हैं। यह व्याख्या पर्याप्त विस्तृत है। इसमें भामह की अपेक्षा कुछ अधिक सूत्र माने गये हैं। इसमें प्राकृतप्रकाश के पाँचवें और छठे परिच्छेद को एक ही पाँचवें परिच्छेद में समाविष्ट कर लिया गया है। यह व्याख्या केवल आठवें (नवें) परिच्छेद तक मिलती है।

प्राकृतप्रकाश की चौथी व्याख्या 'सुबोधिनी' है। इसके लेखक सदानन्द हैं। इनका समय 15वीं और 17वीं शताब्दी के मध्य का है। यह प्राकृतसंजीवनी के समान आठवें परिच्छेद तक है और वास्तव में उसका लघुरूप ही है।

प्राकृतप्रकाश की पाँचवी व्याख्या 'चन्द्रिका' है। यह आधुनिक युग में लिखी गई संस्कृत व्याख्या है। इसके लेखक म.म.मथुराप्रसाद दीक्षित हैं। यह व्याख्या 'प्राकृतसंजीवनी' और 'सुबोधिनी' का अनुसरण करती हुई भी मौलिकता को लिए हुए है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इन पाँच प्रसिद्ध व्याख्याओं के अतिरिक्त इसकी दो और संस्कृत व्याख्याएँ प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें से एक है रामपाणिवाद की 'प्राकृतवृत्ति' और दूसरी नारायण विद्याविनोद की 'प्राकृतदीपिका'। इन व्याख्याओं के अतिरिक्त बंगला, गुजराती आदि अन्य भाषाओं में भी इसकी व्याख्याएँ की गई हैं। इससे पता चलता है कि प्राकृत अध्ययन के क्षेत्र में 'प्राकृतप्रकाश' अत्यन्त महत्वपूर्ण रचना रही।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट - 2

सूत्रों में प्रयुक्त सन्धि - नियम

स्वर सन्धि

1. यदि इ, ई, उ, ऊ के बाद भिन्न स्वर अ, आ, ए आदि आवे तो इ, ई के स्थान पर य् और उ, ऊ के स्थान पर व् हो जाता है -

   सु + अमोः = स्वमोः (सूत्र - 6/18)

   ङसि + आंसु = ङस्यांसु (सूत्र - 5/11)

   ई + ऊत्वम् = यूत्वम् (सूत्र - 5/16)

2. यदि अ, आ के बाद अ या आ आवे तो उसके स्थान पर आ हो जाता है-

   न + आमन्त्रणे = नामन्त्रणे (सूत्र - 5/27)

   वा + अन्त्य = वान्त्य (सूत्र - 5/42)

   सर्व + आदेः = सर्वादेः (सूत्र - 6/1)

   च + अमि = चामि (सूत्र - 6/27)

3. यदि औ आदि के बाद अ आदि स्वर आवे तो उसके स्थान पर आव् हो जाता है -

   सौ + ओत्त्वं = सावोत्त्वं (सूत्र - 6/19)

   सौ + अनपुंसके = सावनपुंसके (सूत्र - 6/22)

व्यंजन सन्धि

4. यदि त् के आगे अ, आ आदि स्वर तथा द्, व्, भ् आदि आवे तो त् के स्थान पर द् हो जाता है -

   क्वचित् + ङसि = क्वचिद् ङसि (सूत्र - 5/13)

   इत् + उतोः = इदुतोः (सूत्र - 5/14)

   उत् + ओतौ = उदोतौ (सूत्र - 5/19)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आत् + ईतौ = आदीतौ (सूत्र - 5/24)

ईत् + ऊतोः = ईदूतोः (सूत्र - 5/29)

5. पदान्त म् के आगे कोई व्यंजन हो तो म् का अनुस्वार हो जाता है-

स्त्रियाम् + शस = स्त्रियां शस (सूत्र - 5/19)

ङसाम् + णो = ङसां णो (सूत्र - 5/38)

6. यदि स् के आगे श् वर्ग हो तो स् को श् होगा -

जस् + शसोः = जश्शसोः (सूत्र - 5/2)

जस् + शस् = जश्शस् (सूत्र - 5/11)

विसर्ग सन्धि

7. यदि विसर्ग से पहले अ या आ के अतिरिक्त इ, ए, ओ आदि स्वर हों और विसर्ग के बाद अ आदि स्वर अथवा म् , ण्, ल्, व् आदि व्यंजन हों तो विसर्ग का र् हो जाता है -

शसोः + लोपः = शसोर्लोपः (सूत्र - 5/2)

आमोः + णः = आमोर्णः (सूत्र - 5/4)

ङसेः + आ = ङसेरा (सूत्र - 5/6)

ङेः + एम्मी = ङेरेम्मी (सूत्र - 5/9)

ईदूतोः + ह्रस्वः = ईदूतोर्ह्रस्वः (सूत्र - 5/29)

8. यदि विसर्ग से पहले अ या आ और बाद में कोई स्वर अथवा ङ्, म् आदि हों तो विसर्ग का लोप हो जाता है -

अतः + ओत् = अत ओत् (सूत्र - 5/1)

शसः + उदोतौ = शस उदोतौ (सूत्र - 5/19)

स्त्रियामातः + एत् = स्त्रियामात एत् (सूत्र - 5/28)

ऋतः + आरः = ऋत आरः (सूत्र - 5/31)

शसः + एत् = शस एत् (सूत्र - 5/39)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

9. यदि विसर्ग से पहले अ हो और विसर्ग के बाद म्, ङ्, द्, ह् आदि हों तो अ और विसर्ग मिलकर ओ हो जाता है -

भिसः + हिं = भिसो हिं (सूत्र - 5/5)

भ्यसः + हिन्तो = भ्यसो हिन्तो (सूत्र - 5/7)

स्सः + ङसः = स्सो ङसः (सूत्र - 5/8)

ङसः + वा = ङसो वा (सूत्र - 5/15)

10. यदि विसर्ग के बाद त् हो तो विसर्ग के स्थान पर स् और च् हो तो श् हो जाता है -

जसः + च = जसश्च (सूत्र - 5/16)

ङसः + च = ङसश्च (सूत्र - 5/42)

ओः + च = ओश्च (सूत्र - 6/10)

त्थयोः + त = त्थयोस्त (सूत्र - 6/21)

ङ्योः + तइ = ङ्योस्त्इ (सूत्र - 6/30)

11. यदि विसर्ग से पहले अ और बाद में भी अ हो तो दोनों मिलकर ओऽ रूप हो जाता है -

अतः + अमः = अतोऽमः (सूत्र - 5/3)

नातः + अदातौ = नातोऽदातौ (सूत्र - 5/23)

आत्मनः + अप्पाणो = आत्मनोऽप्पाणो (सूत्र - 5/45)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट - 3

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
1.	5/1	अत ओत् सोः {(अतः)+(ओत्)} सोः	8
2.	5/2	जश्शसोर्लोपः {(जस्)+(शसोः)+(लोपः)}	6,7
3.	5/3	अतोऽमः {(अतः)+(अमः)}	11
4.	5/4	टामोर्णः {(टा)+(आमोः)+(णः)}	2, 7
5.	5/5	भिसो हिं {(भिसः)+(हिं)}	9
6.	5/6	ङसेरादोदुहयः {(ङसेः)+(आ)+(दो)-(दु)-(हयः)}	7
7.	5/7	भ्यसो हिन्तो सुन्तो {(भ्यसः)+(हिन्तो)} सुन्तो	9

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
अतः	(अत्) 5/1	भूभृत्
ओत्	(ओत्) 1/1	भूभृत्
सोः	(सु) 6/1	गुरु
जस्	(जस्)	
शसोः	(शस्) 6/2	भूभृत्
लोपः	(लोप) 1/1	राम
अतः	(अत्) 6/1	भूभृत्
अमः	(अम्) 6/1	भूभृत्
टा	(टा)	
आमोः	(आम्) 6/2	भूभृत्
णः	(ण) 1/1	राम
भिसः	(भिस्) 6/1	भूभृत्
हिं	(हिं) 1/1	परम्परानुसरण
ङसेः	(ङसि) 6/1	हरि
आ	(आ)	
दो	(दो)	
दु	(दु)	
हयः	(हि) 1/3	हरि
भ्यसः	(भ्यस्) 6/1	भूभृत्
हिन्तो	(हिन्तो) 1/1	परम्परानुसरण
सुन्तो	(सुन्तो) 1/1	परम्परानुसरण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
8.	5/8	स्सो ङसः {(स्सः)+(ङसः)}	9
9.	5/9	ङेरेम्मी {(ङेः)+(ए)+(म्मी)}	7
10.	5/10	सुपः सुः	
11.	5/11	जश्शस्ङस्यांसु दीर्घः {(जस्)+(शस्)+(ङसि)+(आंसु)}	6, 1 दीर्घः
12.	5/12	ए च सुप्यङिङसोः ए च {(सुपि)+(अ)+(ङि)+(ङसोः)}	1
13.	5/13	क्वचिद् ङसिङ्योर्लोपः {(क्वचित्)+(ङसि)+(ङ्योः)+(लोपः)}	4, 7

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
स्सः	(स्स) 1/1	राम
ङसः	(ङस्) 6/1	भूभृत्
ङेः	(ङि) 6/1	हरि
ए	(ए)	
म्मी	(म्मि) 1/2	हरि
सुपः	(सुप्) 6/1	भूभृत्
सुः	(सु) 1/1	गुरु
जस्	(जस्)	
शस्	(शस्)	
ङसि	(ङसि)	
आंसु	(आम्) 7/3	भूभृत्
दीर्घः	(दीर्घ) 1/1	राम
ए	(ए) 1/1	परम्परानुसरण
च	(च)	
सुपि	(सुप्) 7/1	भूभृत्
अ	(अ)	
ङि	(ङि)	
ङसोः	(ङस्) 7/2	भूभृत्
क्वचित्	(क्वचित्)	
ङसि	(ङसि)	
ङ्योः	(ङि) 7/2	हरि
लोपः	(लोप) 1/1	राम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
14.	5/14	इदुतोः शसो णो {(इत्)+(उतोः)+(शसः)+(णो)}	4, 9
15.	5/15	ङसो वा {(ङसः)+(वा)}	9
16.	5/16	जसश्च ओ यूत्वम् {(जसः)+(च)} ओ {(ई)+(ऊत्वम्)}	10, 1
17.	5/17	टाणा	
18.	5/18	सुभिस्सुप्सु दीर्घः	
19.	5/19	स्त्रियां शस उदोतौ {(स्त्रियाम्)+(शसः)+(उत्)+(ओतौ)}	5, 8, 4

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
इत्	(इत्)	
उतोः	(उत्) 6/2	भूभृत्
शसः	(शस्) 6/1	भूभृत्
णो	(णो) 1/1	परम्परानुसरण
ङसः	(ङस्) 6/1	भूभृत्
वा	(वा)	
जसः	(जस्) 6/1	भूभृत्
च	(च)	
ओ	(ओ) 1/1	परम्परानुसरण
ई	(ई)	
ऊत्वम्	(ऊत्व)	फल
टा	(टा)	
णा	(णा) 1/1	माता
सु	(सु)	
भिस्	(भिस्)	
सुप्सु	(सुप्) 7/3	भूभृत्
दीर्घः	(दीर्घ) 1/1	राम
स्त्रियाम्	(स्त्री) 7/1	स्त्री
शसः	(शस्) 6/1	भूभृत्
उत्	(उत्)	
ओतौ	(ओत्) 1/2	भूभृत्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
20.	5/20	जसो वा {(जसः)+(वा)}	9
21.	5/21	अमि ह्रस्वः	
22.	5/22	टाङस्ङीनामिदेददातः {(टा)+(ङस्)+(ङीनाम्)+(इत्) (एत्)+(अत्)+(आतः)}	4
23.	5/23	नातोऽदातौ {(न)+(आतः)+(अत्)+(आतौ)}	2, 11, 4
24.	5/24	आदीतौ बहुलम् {(आत्)+(ईतौ)} बहुलम्	4
25.	5/25	न नपुंसके	

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
जसः	(जस्) 6/1	भूभृत्
वा	(वा)	
अमि	(अम्) 7/1	भूभृत्
ह्रस्वः	(ह्रस्व) 1/1	राम
टा	(टा)	
ङस्	(ङस्)	
ङीनाम्	(ङि) 6/3	हरि
इत्	(इत्)	
एत्	(एत्)	
अत्	(अत्)	
आतः	(आत्) 1/3	भूभृत्
न	(न)	
आतः	(आत्) 5/1	भूभृत्
अत्	(अत्)	
आतौ	(आत्) 1/2	भूभृत्
आत्	(आत्)	
ईतौ	(ईत्) 1/2	भूभृत्
बहुलम्	(बहुल) 1/1	फल
न	(न)	
नपुंसके	(नपुंसक) 7/1	राम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
26.	5/26	इं जश्शसोर्दीर्घः इं {(जस्)+(शसः)+(दीर्घः)}	6, 9
27.	5/27	नामन्त्रणे सावोत्वदीर्घबिन्दवः {(न)+(आमन्त्रणे)} {(सौ)+(ओत्व)+(दीर्घ)+(बिन्दवः)}	2, 3
28.	5/28	स्त्रियामात एत् {(स्त्रियाम्)+(आतः)+(एत्)}	8
29.	5/29	ईदूतोर्ह्रस्वः {(ईत्)+(ऊतोः)+(ह्रस्वः)}	4, 7
30.	5/30	सोर्बिन्दुर्नपुंसके {(सोः)+(बिन्दुः)+(नपुंसके)}	7
31.	5/31	ऋत आरः सुपि {(ऋतः)+(आरः)} सुपि	8

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
इं	(इं) 1/1	परम्परानुसरण
जस्	(जस्)	
शसः	(शस्) 6/1	भूभृत्
दीर्घः	(दीर्घ) 1/1	राम
न	(न)	
आमन्त्रणे	(आमन्त्रण) 7/1	राम
सौ	(सु) 7/1	गुरु
ओत्व	(ओत्व)	
दीर्घ	(दीर्घ)	
बिन्दवः	(बिन्दु) 1/3	गुरु
स्त्रियाम्	(स्त्री) 7/1	स्त्री
आतः	(आत्) 6/1	भूभृत्
एत्	(एत्) 1/1	भूभृत्
ईत्	(ईत्)	
ऊतोः	(ऊत्) 6/2	भूभृत्
ह्रस्वः	(ह्रस्व) 1/1	राम
सोः	(सु) 6/1	गुरु
बिन्दुः	(बिन्दु) 1/1	गुरु
नपुंसके	(नपुंसक) 7/1	राम
ऋतः	(ऋत्) 6/1	भूभृत्
आरः	(आर) 1/1	राम
सुपि	(सुप्) 7/1	भूभृत्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
32.	5/32	मातुरात् {(मातुः)+(आत्)}	7
33.	5/33	उर्जस्-शस्-टा-ङस्-सुप्सु वा {(उः)+(जस्)}	7
34.	5/34	पितृभ्रातृजामातृणामरः {(पितृ)-(भ्रातृ)-(जामातृर्णाम्)+(अरः)}	
35.	5/35	आ च सौ	
36.	5/36	राज्ञः	
37.	5/37	आमन्त्रणे वा बिन्दुः	

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
मातुः	(मातृ) 6/1	मातृ
आत्	(आत्) 1/1	भूभृत्
उः	(उ) 1/1	गुरु
जस्	(जस्)	
शस्	(शस्)	
टा	(टा)	
ङस्	(ङस्)	
सुप्सु	(सुप्) 7/3	भूभृत्
वा	(वा)	
पितृ	(पितृ)	
भ्रातृ	(भ्रातृ)	
जामातृणाम्	(जामातृ) 6/3	पितृ
अरः	(अर) 1/1	राम
आ	(आ) 1/1	माता
च	(च)	
सौ	(सु) 7/1	गुरु
राज्ञः	(राजन्) 6/1	राजन्
आमन्त्रणे	(आमन्त्रण) 7/1	राम
वा	(वा)	
बिन्दुः	(बिन्दु) 1/1	गुरु

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
38.	5/38	जस्-शस्-ङसां णो {(ङसाम्)+(णो)}	5
39.	5/39	शस एत् {(शसः)+(एत्)}	8
40.	5/40	आमो णं {(आमः)+(णं)}	9
41.	5/41	टाणा	
42.	5/42	ङसश्च द्वित्वं वान्त्यलोपश्च {(ङसः)+(च)}{(द्वित्वम्)+(वा)+ +(अन्त्य)+(लोपः)+(च)}	10, 5, 2, 10
43.	5/43	इदद्वित्वे {(इत्)+(अ)+(द्वित्वे)}	4

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
जस्	(जस्)	
शस्	(शस्)	
ङसाम्	(ङस्) 6/3	भूभृत्
णो	(णो) 1/1	परम्परानुसरण
शसः	(शस्) 6/1	भूभृत्
एत्	(एत्) 1/1	भूभृत्
आमः	(आम्) 6/1	भूभृत्
णं	(णं) 1/1	परम्परानुसरण
टा	(टा)	
णा	(णा) 1/1	लता
ङसः	(ङस्) 6/1	भूभृत्
च	(च)	
द्वित्वम्	(द्वित्व) 1/1	फल
वा	(वा)	
अन्त्य	(अन्त्य)	
लोपः	(लोप) 1/1	राम
च	(च)	
इत्	(इत्) 1/1	भूभृत्
अ	(अ)	
द्वित्वे	(द्वित्व) 7/1	राम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
44.	5/44	आ णोणमोरङसि {(णो)+(णमोः)+(अ)+(ङसि)}	7
45.	5/45	आत्मनोऽप्पाणो वा {(आत्मनः)+(अप्पाणः)+(वा)}	11, 9
46.	5/46	इत्वद्वित्ववर्जं राजवदनादेशे {(राजवत्)+(अन्)+(आदेशे)}	4
47.	6/1	सर्वादेर्जस एत्वम् {(सर्व)+(आदेः)+(जसः)+(एत्वम्)}	2, 7, 8
48.	6/2	ङेः सिसंम्मित्थाः	

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
आ	(आ) 1/1	लता
णो	(णो)	
णमोः	(णम्) 7/2	भूभृत्
अ	(अ)	
ङसि	(ङस्) 7/1	भूभृत्
आत्मनः	(आत्मन्) 6/1	आत्मन्
अप्पाणः	(अप्पाण) 1/1	राम
वा	(वा)	
इत्व	(इत्व)	
द्वित्व	(द्वित्व)	
वर्ज	(वर्ज)	
राजवत्	(राजवत्)	
अन्	(अन्)	
आदेशे	(आदेश) 7/1	राम
सर्व	(सर्व)	
आदेः	(आदि) 5/1	हरि
जसः	(जस्) 6/1	भूभृत्
एत्वम्	(एत्व) 1/1	फल
ङेः	(ङि) 6/1	हरि
स्सिं	(स्सिं)	
म्मि	(म्मि)	
त्थाः	(त्थ) 1/3	राम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
49.	6/3	इदमेतद्किंयत्तद्भ्यः टाइणा वा {(इदम्)+(एतत्)+(किं)+(यत्)+(तद्भ्यः)}	4
50.	6/4	आम एसिं {(आमः)+(एसिं)}	8
51.	6/5	किंयत्तद्भ्यो ङस आसः {(किं)+(यत्)+(तद्भ्यः)+(ङसः)+(आसः)}	9, 8
52.	6/6	ईद्भ्यः स्सा से	
53.	6/7	डेर्हिं {(डेः)+(हिं)}	7

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
इदम्	(इदम्)	
एतत्	(एतत्)	
किं	(किं)	
यत्	(यत्)	
तद्भ्यः	(तत्) 5/3	भूभृत्
टा	(टा)	
इणा	(इणा) 1/1	लता
वा	(वा)	
आमः	(आम्) 6/1	भूभृत्
एसिं	(एसिं) 1/1	परम्परानुसरण
किं	(किं)	
यत्	(यत्)	
तद्भ्यः	(तत्) 5/3	भूभृत्
ङसः	(ङस्) 6/1	भूभृत्
आसः	(आस) 1/1	राम
ईद्भ्यः	(ईत्) 5/3	भूभृत्
स्सा	(स्सा) 1/1	लता
से	(से) 1/1	परम्परानुसरण
ङेः	(ङि) 6/1	हरि
हिं	(हिं) 1/1	परम्परानुसरण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
54.	6/8	आहे इआ काले	
55.	6/9	त्तो दो ङसेः	
56.	6/10	तद ओश्च {(तदः)+(ओः)+(च)}	8, 10
57.	6/11	ङसा से	
58.	6/12	आमा सिं	
59.	6/13	किमः कः	

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
आहे	(आहे) 1/1	परम्परानुसरण
इआ	(इआ) 1/1	लता
काले	(काल) 7/1	राम
तो	(त्तो) 1/1	परम्परानुसरण
दो	(दो) 1/1	परम्परानुसरण
ङसेः	(ङसि) 6/1	हरि
तदः → ततः	(तत्) 5/1	भूभृत्
ओः	(ओ) 1/1	परम्परानुसरण
च	(च)	
ङसा	(ङस्) 3/1	भूभृत्
से	(से) 1/1	परम्परानुसरण
आमा	(आम्) 3/1	भूभृत्
सिं	(सिं) 1/1	परम्परानुसरण
किमः	(किम्) 6/1	भूभृत्
कः	(क) 1/1	राम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
60.	6/14	इदमः इमः	
61.	6/15	स्सस्सिमोरद्वा {(स्स)+(स्सिमोः)+(अत्)+(वा)}	7, 4
62.	6/16	डेर्देन हः {(डेः)+(देन)} हः	7
63.	6/17	न त्थः	
64.	6/18	नपुंसके स्वमोरिदमिणमिणमो {(सु)+(अमोः)+(इदम्)+ (इणम्)+(इणमो)}	1, 7
65.	6/19	एतदः सावोत्त्वं वा {(सौ)+(ओत्त्वम्)+(वा)}	3, 5

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
इदमः	(इदम्) 6/1	भूभृत्
इमः	(इम) 1/1	राम
स्स	(स्स)	
स्सिमोः	(स्सिम्) 7/2	भूभृत्
अत्	(अत्) 1/1	भूभृत्
वा	(वा)	
ङेः	(ङि) 6/1	हरि
देन	(द) 3/1	राम
हः	(ह) 1/1	राम
न	(न)	
त्थः	(त्थ) 1/1	राम
नपुंसके	(नपुंसक) 7/1	राम
सु	(सु)	
अमोः	(अम्) 7/2	भूभृत्
इदम्	(इदम्) 1/1	इदम्
इणम्	(इणम्) 1/1	भूभृत्
इणमो	(इणमो) 1/1	परम्परानुसरण
एतदः→एततः	(एतत्) 5/1	भूभृत्
सौ	(सु) 7/1	गुरु
ओत्त्वम्	(ओत्त्व) 1/1	फल
वा	(वा)	

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
66.	6/20	त्तो ङसेः	
67.	6/21	त्तोत्थयोस्तलोपः {(त्तो)+(त्थयोः)+(त)+(लोपः)}	10
68.	6/22	तदेतदोः सः सावनपुंसके {(तत्)+(एतदोः)} सः {(सौ)+(अ)+(नपुंसके)}	4, 3
69.	6/23	अदसो दो मुः {(अदसः)+(दः)+(मुः)}	9
70.	6/24	हश्च सौ {(हः)+(च)}	10
71.	6/25	पदस्य	

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
त्तो	(त्तो) 1/1	परम्परानुसरण
ङसेः	(ङसि) 6/1	हरि
त्तो	(त्तो)	
त्थयोः	(त्थ) 7/2	राम
त	(त)	
लोपः	(लोप) 1/1	राम
तत्	(तत्)	
एतदोः→एततोः	(एतत्) 7/2	भूभृत्
सः	(स) 1/1	राम
सौ	(सु) 7/1	गुरु
अ	(अ)	
नपुंसके	(नपुंसक) 7/1	राम
अदसः	(अदस्) 6/1	भूभृत्
दः	(द) 1/1	राम
मुः	(मु) 1/1	गुरु
हः	(ह) 1/1	राम
च	(च)	
सौ	(सु) 7/1	गुरु
पदस्य	(पद) 6/1	राम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
72.	6/26	युष्मदस्तं तुमं {(युष्मदः)+(तं)}	10
73.	6/27	तुं चामि {(च)+(अमि)}	2
74.	6/28	तुज्झे तुम्हे जसि	
75.	6/29	वो च शसि	
76.	6/30	टाङ्योस्तइ तए तुमए तुमे {(टा)+(ङ्योः)+(तइ)}	10

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
युष्मदः	(युष्मद्) 6/1	भूभृत्
तं	(तं) 1/1	परम्परानुसरण
तुमं	(तुमं) 1/1	परम्परानुसरण
तुं	(तुं) 1/1	परम्परानुसरण
च	(च)	
अमि	(अम्) 7/1	भूभृत्
तुज्झे	(तुज्झे) 1/1	परम्परानुसरण
तुम्हे	(तुम्हे) 1/1	परम्परानुसरण
जसि	(जस्) 7/1	भूभृत्
वो	(वो) 1/1	परम्परानुसरण
च	(च)	
शसि	(शस्) 7/1	भूभृत्
टा	(टा)	
ङ्योः	(ङि) 7/2	हरि
तइ	(तइ) 1/1	परम्परानुसरण
तए	(तए) 1/1	परम्परानुसरण
तुमए	(तुमए) 1/1	परम्परानुसरण
तुमे	(तुमे) 1/1	परम्परानुसरण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
77.	6/31	ङसि तुव-तुमो-तुह-तुज्झ-तुम्ह-तुम्माः	
78.	6/32	आङि च ते दे	
79.	6/33	तुमाइ च	
80.	6/34	तुज्झेहिं तुम्हेहिं तुम्मेहिं भिसि	
81.	6/35	ङसौ तत्तो तइत्तो तुमादो तुमादु तुमाहि	

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
ङसि	(ङस्) 7/1	भूभृत्
तुव	(तुव)	
तुमो	(तुमो)	
तुह	(तुह)	
तुज्झ	(तुज्झ)	
तुम्ह	(तुम्ह)	
तुम्माः	(तुम्म) 1/3	राम
आङि	(आङ्) 7/1	भूभृत्
च	(च)	
ते	(ते) 1/1	परम्परानुसरण
दे	(दे) 1/1	परम्परानुसरण
तुमाइ	(तुमाइ) 1/1	परम्परानुसरण
च	(च)	
तुज्झेहिं	(तुज्झेहिं) 1/1	परम्परानुसरण
तुम्हेहिं	(तुम्हेहिं) 1/1	परम्परानुसरण
तुम्मेहिं	(तुम्मेहिं) 1/1	परम्परानुसरण
भिसि	(भिस्) 7/1	भूभृत्
ङसौ	(ङसि) 7/1	हरि
तत्तो	(तत्तो) 1/1	परम्परानुसरण
तइत्तो	(तइत्तो) 1/1	परम्परानुसरण
तुमादो	(तुमादो) 1/1	परम्परानुसरण
तुमादु	(तुमादु) 1/1	परम्परानुसरण
तुमाहि	(तुमाहि) 1/1	परम्परानुसरण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
82.	6/36	तुम्हाहिन्तो तुम्हासुन्तो भ्यसि	
83.	6/37	वो भे तुज्झाणं तुम्हाणमामि {(तुम्हाणम्)+(आमि)}	
84.	6/38	ङै तुमम्मि तुमस्सिं	
85.	6/39	तुज्झेसु तुम्हेसु सुपि	
86.	6/40	अस्मदो हमहमहअं सौ {(अस्मदः)+(हम्→हं)+(अहम्→अहं) +(अहअम्→अहअं)}	9
87.	6/41	अहम्मिरमि च {(अहम्मिः)+(अमि)}	7

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
तुम्हाहिन्तो	(तुम्हाहिन्तो) 1/1	परम्परानुसरण
तुम्हासुन्तो	(तुम्हासुन्तो) 1/1	परम्परानुसरण
भ्यसि	(भ्यस्) 7/1	भूभृत्
वो	(वो) 1/1	परम्परानुसरण
भे	(भे) 1/1	परम्परानुसरण
तुज्झाणं	(तुज्झाणं) 1/1	परम्परानुसरण
तुम्हाणं	(तुम्हाणं) 1/1	परम्परानुसरण
आमि	(आम्) 7/1	भूभृत्
ङौ	(ङि) 7/1	हरि
तुमम्मि	(तुमम्मि) 1/1	परम्परानुसरण
तुमस्सिं	(तुमस्सिं) 1/1	परम्परानुसरण
तुज्झेसु	(तुज्झेसु) 1/1	परम्परानुसरण
तुम्हेसु	(तुम्हेसु) 1/1	परम्परानुसरण
सुपि	(सुप्) 7/1	भूभृत्
अस्मदः	(अस्मद्) 6/1	भूभृत्
हं	(हं) 1/1	परम्परानुसरण
अहं	(अहं) 1/1	परम्परानुसरण
अहअं	(अहअं) 1/1	परम्परानुसरण
सौ	(सु) 7/1	गुरु
अहम्मिः	(अहम्मि) 1/1	हरि
अमि	(अम्) 7/1	भूभृत्
च	(च)	

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
88.	6/42	मं ममं	
89.	6/43	अम्हे जश्शसोः {(जस्)+(शसोः)}	6
90.	6/44	णो शसि	
91.	6/45	आङि मे ममाइ	
92.	6/46	ङौ च मइ मए	
93.	6/47	अम्हेहिं भिसि	
94.	6/48	मत्तो मइत्तो ममादो ममादु ममाहि ङसौ	

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
मं	(मं) 1/1	परम्परानुसरण
ममं	(ममं) 1/1	परम्परानुसरण
अम्हे	(अम्हे) 1/1	परम्परानुसरण
जस्	(जस्)	
शसोः	(शस्) 7/2	भूभृत्
णो	(णो) 1/1	परम्परानुसरण
शसि	(शस्) 7/1	भूभृत्
आङि	(आङ्) 7/1	भूभृत्
मे	(मे) 1/1	परम्परानुसरण
ममाइ	(ममाइ) 1/1	परम्परानुसरण
ङौ	(ङि) 7/1	हरि
च	(च)	
मइ	(मइ) 1/1	परम्परानुसरण
मए	(मए) 1/1	परम्परानुसरण
अम्हेहिं	(अम्हेहिं) 1/1	परम्परानुसरण
भिसि	(भिस्) 7/1	भूभृत्
मत्तो	(मत्तो) 1/1	परम्परानुसरण
मइत्तो	(मइत्तो) 1/1	परम्परानुसरण
ममादो	(ममादो) 1/1	परम्परानुसरण
ममादु	(ममादु) 1/1	परम्परानुसरण
ममाहि	(ममाहि) 1/1	परम्परानुसरण
ङसौ	(ङसि) 7/1	हरि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
95.	6/49	अम्हाहिन्तो अम्हासुन्तो भ्यासि	
96.	6/50	मे मम मह मज्झ ङसि	
97.	6/51	मज्झ णो अम्ह अम्हाणमम्हे आमि {(अम्हाणम्)+(अम्हे)}	
98.	6/52	ङौ ममम्मि ममस्सिं	
99.	6/53	अम्हेसु सुपि	
100.	6/54	द्वेर्दो {(द्वेः)+(दो)}	7

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
अम्हाहिन्तो	(अम्हाहिन्तो) 1/1	परम्परानुसरण
अम्हासुन्तो	(अम्हासुन्तो) 1/1	परम्परानुसरण
भ्यसि	(भ्यस्) 7/1	भूभृत्
मे	(मे) 1/1	परम्परानुसरण
मम	(मम) 1/1	परम्परानुसरण
मह	(मह) 1/1	परम्परानुसरण
मज्झ	(मज्झ) 1/1	परम्परानुसरण
ङसि	(ङस्) 7/1	भूभृत्
मज्झ	(मज्झ) 1/1	परम्परानुसरण
णो	(णो) 1/1	परम्परानुसरण
अम्ह	(अम्ह) 1/1	परम्परानुसरण
अम्हाणं	(अम्हाणं) 1/1	परम्परानुसरण
अम्हे	(अम्हे) 1/1	परम्परानुसरण
आमि	(आम्) 7/1	भूभृत्
ङौ	(ङि) 7/1	हरि
ममम्मि	(ममम्मि) 1/1	परम्परानुसरण
ममस्सिं	(ममस्सिं) 1/1	परम्परानुसरण
अम्हेसु	(अम्हेसु) 1/1	परम्परानुसरण
सुपि	(सुप्) 7/1	भूभृत्
द्वेः	(द्वि) 6/1	हरि
दो	(दो) 1/1	परम्परानुसरण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
101.	6/55	त्रेस्ति {(त्रेः)+(ति)}	10
102.	6/56	तिण्णि जश्शस्भ्याम् {(जस्)+(शस्भ्याम्)}	6
103.	6/57	द्वेर्दुवे दोण्णि वा {(द्वेः)+(दुवे)}	7
104.	6/58	चतुरश्चत्तारो चत्तारि {(चतुरः)+(चत्तारो)}	10
105.	6/59	एषामामो ण्हं {(एषाम्)+(आमः)+(ण्हं)}	9
106.	6/60	शेषोऽदन्तवत् {(शेषः)+(अदन्तवत्)}	11

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
त्रेः	(त्रि) 6/1	हरि
ति	(ति) 1/1	परम्परानुसरण
तिण्णि	(तिण्णि) 1/1	परम्परानुसरण
जस्	(जस्)	
शस्भ्याम्	(शस्) 3/2	भूभृत्
द्वेः	(द्वि) 6/1	हरि
दुवे	(दुवे) 1/1	परम्परानुसरण
दोणि	(दोणि) 1/1	परम्परानुसरण
वा	(वा)	
चतुरः	(चतुर्) 6/1	भूभृत्
चत्तारो	(चत्तारो) 1/1	परम्परानुसरण
चत्तारि	(चत्तारि) 1/1	परम्परानुसरण
एषाम्	(इदम्) 6/3	इदम्
आमः	(आम्) 6/1	भूभृत्
ण्हं	(ण्हं) 1/1	परम्परानुसरण
शेषः	(शेष) 1/1	राम
अदन्तवत्	(अदन्तवत्)	

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
107.	6/61	न ङिङस्योरेदातौ {(ङि)+(ङस्योः)+(एत्)+(आतौ)}	7, 4
108.	6/62	ए भ्यसि	
109.	6/63	द्विवचनस्य बहुवचनम्	
110.	6/64	चतुर्थ्याः षष्ठी	
111.	9/18	शेषः संस्कृतात्	
112.	12/3	अनादावयुजोस्तथयोर्दधौ {(अनादौ)+(अयुजोः)+(तथयोः)+(दधौ)}	3, 10, 7

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
न	(न)	
ङि	(ङि)	
ङस्योः	(ङसि) 7/2	हरि
एत्	(एत्)	
आतौ	(आत्) 1/2	भूभृत्
ए	(ए) 1/1	परम्परानुसरण
भ्यसि	(भ्यस्) 7/1	भूभृत्
द्विवचनस्य	(द्विवचन) 6/1	राम
बहुवचनम्	(बहुवचन) 1/1	फल
चतुर्थ्याः	(चतुर्थी) 6/1	नदी
षष्ठी	(षष्ठी) 1/1	नदी
शेषः	(शेष) 1/1	राम
संस्कृतात्	(संस्कृत) 5/1	राम
अनादौ	(अनादि) 7/1	हरि
अयुजोः	(अयुज्) 7/2	भूभृत्
त	(त)	
थयोः	(थ) 6/2	राम
द	(द)	
धौ	(ध) 1/2	राम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं. (1)	सूत्र-संख्या (2)	सूत्र (3)	सन्धि-नियम (4)
113.	12/11	णिर्जश्शसोर्वा क्लीबे स्वरदीर्घश्च {(णिः)+(जस्)+(शसोः)+(वा)} {(स्वर)+(दीर्घः)+(च)}	7, 6, 7, 10
114.	12/32	शेषं महाराष्ट्रीवत् {(शेषम्)+(महाराष्ट्रीवत्)}	5

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र-शब्द (5)	मूलशब्द, विभक्ति (6)	शब्दानुसरण (7)
णिः	(णि) 1/1	हरि
जस्	(जस्)	
शसोः	(शस्) 6/2	भूभृत्
वा	(वा)	
क्लीबे	(क्लीब) 7/1	राम
स्वर	(स्वर)	
दीर्घः	(दीर्घ) 1/1	राम
च	(च)	
शेषम्	(शेष) 2/1	राम
महाराष्ट्रीवत्	(महाराष्ट्रीवत्)	

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सहायक पुस्तकें एवं कोश

1. प्राकृतप्रकाशः	:	सम्पादक - आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी)
2. प्राकृतप्रकाशः	:	सम्पादक - डॉ. श्रीकान्त पाण्डेय (साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ - 2)
3. The Prākṛtaprakāśa	:	E. B. Cowell (Punthi Pustak, Calcutta)
4. प्रौढ़ रचनानुवाद कौमुदी	:	डॉ. कपिलदेव द्विवेदी (विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)
5. पाइअ-सद्द-महण्णवो	:	पं. हरगोविन्ददास त्रिकमचन्द सेठ (प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी)
6. कातन्त्र व्याकरण	:	गणिनी आर्यिका ज्ञानमती (दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान)
7. वृहद् अनुवाद-चन्द्रिका	:	चक्रधर नौटियाल 'हंस' (मोतीलाल बनारसीदास नारायणा, फेज I दिल्ली)
8. आचार्य हेमचन्द्र और उनका शब्दानुशासन एक अध्ययन	:	डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, (चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी 1)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org